राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, शुक्रवार, 05 दिसंबर 2025

वर्ष 14,अंक 232, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

गोलीकांड, प्रधान पर साजिश का आरोप, घायल के परिजनों और आरोपी की बातचीत का ऑडियो, गहराया शक..03

महाविद्यालय में विवादः छात्र ने लगाया धमकी और अभद्र व्यवहार का आरोप...04

पुतिन क्या हर पल बंदूक निकालने को तैयार रहते हैं? दायां हाथ न हिलने के पीछे की असल कहानी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

दुनिया के सबसे ताकतवर नेताओं में से एक, व्लादिमीर पुतिन जब किसी कमरे में दाखिल होते हैं, रेड कार्पेट पर चलते हैं, या किसी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर कदम रखते हैं, तो पूरी दुनिया की नजरें उन पर होती हैं. उनकी राजनीति, उनके फैसले और उनकी रणनीतियों पर तो चर्चा होती ही है, लेकिन एक और चीज है जिसने वर्षों से न्यूरोलॉजिस्ट्स, जासूसों और बॉडी लैंग्वेज एक्सपर्ट्स को उलझा कर रखा है. वह है पुतिन के चलने का तरीका.

अगर आपने कभी गौर किया हो, तो चलते समय व्लादिमीर पुतिन का बायां हाथ सामान्य रूप से आगे-पीछे झूलता है, लेकिन उनका दायां हाथ लगभग उनके शरीर से चिपका रहता है. वह स्थिर रहता है, मानो किसी अदृश्य वस्तु को पकड़े हुए हो. इसे विशेषज्ञों ने गनलिंगर गेट (Gunslinger Gait) यानी बंदूकधारी की चाल नाम दिया है. आखिर क्या है इस चाल का रहस्य? क्या यह पार्किंसंस जैसी कोई बीमारी है, या फिर सोवियत जासूसी संस्था चक्रक की उस खौफनाक ट्रेनिंग का हिस्सा, जो आज भी पुतिन के जेहन और शरीर से नहीं निकल पाई है?

चलने की तरीका अलग

सामान्य तौर पर, जब इंसान चलता है, तो शरीर का संतुलन बनाए रखने के लिए उसके दोनों हाथ विपरीत दिशा में हिलते हैं. जब बायां पैर आगे जाता है, तो दायां हाथ आगे आता है, और जब दायां पैर आगे जाता है, तो बायां हाथ. यह एक प्राकृतिक बायोमैकेनिकल प्रक्रिया है. लेकिन पुतिन के मामले में यह नियम टूट जाता है. आप यूट्यूब पर उनके वीडियो देखें, चाहे वह क्रेमलिन के गलियारों में चल रहे हों या किसी मिलिट्री परेड का निरीक्षण कर रहे हों. उनका बायां हाथ पूरी लय में झूलता है, लेकिन दायां हाथ उनकी कमर के पास, दाहिनी जांघ के बिल्कुल करीब स्थिर रहता है. वह बमुश्किल हिलता है.

हॉलीवुड फिल्म के 'का उबॉय' की याद दिलाती

यह चाल किसी हॉलीवुड फिल्म के 'काउबॉय' की याद दिलाती है, जो किसी भी पल अपनी कमर पर लटकी रिवॉल्वर को निकालने के लिए तैयार रहता है. इसी समानता के कारण इसे 'गनलिंगर गेट' कहा गया. शुरुआत में, पश्चिमी मीडिया और इंटरनेट पर कई तरह की अटकलें लगाई गईं. कुछ ने कहा कि उन्हें बचपन में पोलियो हुआ होगा, तो कुछ ने दावा किया कि उन्हें स्ट्रोक आया होगा. लेकिन सच्चाई इन मेडिकल अटकलों से कहीं ज्यादा दिलचस्प और 'खतरनाक' है।

ब्रिटिश मेडिकल जर्नल' का वो चौंकाने वाला अध्ययन

इस रहस्य से पर्दा उठाने की सबसे गंभीर कोशिश 2015 में हुई. पुर्तगाल, इटली और नीदरलैंड के न्यूरोलॉजिस्ट्स की एक टीम ने व्लादिमीर पुतिन के चलने के तरीके पर गहरा शोध किया और अपनी रिपोर्ट प्रतिष्ठित 'ब्रिटिश मेडिकल जर्नल' (BMJ) में प्रकाशित की. इस अध्ययन का नेतृत्व नीदरलैंड के रेडबौड यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के प्रोफेसर बास्टियन ब्लोम कर रहे थे. उन्होंने और उनकी टीम ने पुतिन के दर्जनों वीडियो का विश्लेषण किया. शुरुआत में डॉक्टरों को लगा कि यह पार्किंसंस रोग (Parkinson's Disease) के शुरुआती लक्षण हो सकते हैं. पार्किंसंस में अक्सर शरीर के एक हिस्से में अकड़न आ जाती है और हाथ का हिलना कम हो जाता है. लेकिन जैसे-जैसे उन्होंने पुतिन की अन्य गतिविधियों का विश्लेषण किया, यह थ्योरी खारिज हो गई।

क्यों नहीं है यह पार्किंसंस?

पुतिन के पास जुडो में ब्लैक बेल्ट है. वे वीडियो में विरोधियों को पटकते हुए, भारी वजन उठाते हुए और तैराकी करते हुए नजर आते हैं. उनके दाहिने हाथ में गजब की ताकत दिखती है और कंपनी बिल?कुल भी नहीं होता. वे अपने दाहिने हाथ से ही बिना किसी कंपन के हस्ताक्षर करते हैं. वे अपनी मीटिंग्स के दौरान दाहिने हाथ से तेजी से नोट्स लेते हैं. अगर उन्हें पार्किंसंस या स्ट्रोक होता, तो उनके दाहिने हाथ की मोटर स्किल्स इतनी बारीक और मजबूत नहीं होतीं. तो फिर कारण क्या था?

KGB मैनुअल और 'किलर' ट्रेनिंग

जब मेडिकल कारणों को खारिज कर दिया गया, तो शोधकर्ताओं ने पुतिन के अतीत के पन्नों को पलटना शुरू किया. और जवाब मिला शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ की

खुफिया एजेंसी KGB के पुराने ट्रेनिंग मैनुअल में. व्लादिमीर पुतिन ने 16 साल तक KGB के लिए काम किया है. वे पूर्वी जर्मनी में तैनात थे और एक प्रशिक्षित जासूस थे. KGB के एजेंटों को एक खास तरह की ट्रेनिंग दी जाती थी. शोधकर्ताओं को KGBका एक पुराना ट्रेनिंग मैनुअल मिला, जिसमें एजेंटों को चलने का तरीका सिखाया गया था।

जब आप चल रहे हों, तो अपने हथियार वाले हाथ (दाहिने हाथ) को छाती के करीब या अपनी कमर के पास स्थिर रखें. इसे ज्यादा न हिलाएं, ताकि जरूरत पड़ने पर आप पलक झपकते ही अपनी बंदूक (होल्स्टर से) निकाल सकें और दुश्मन पर फायर कर सकें. यह ट्रेनिंग इसलिए दी जाती थी ताकि चलते-फिरते, भीड़भाड़ में या किसी मिशन के दौरान अगर अचानक हमला करना पड़े या खुद का बचाव करना पड़े, तो हाथ को बंदूक तक पहुंचने में एक मिलीसेकंड का भी अतिरिक्त समय न लगे. हाथ का हिलना मतलब समय की बर्बादी, और जासूसी की दुनिया में समय की बर्बादी का मतलब है... मौत.यह एक बिहेवियरल अडॉप्टेशन है. विशेषज्ञों का मानना है कि पुतिन ने इतनी सख्ती से और इतने लंबे समय तक इस नियम का पालन किया कि यह उनकी 'मसल मेमोरी' का हिस्सा बन गया. भले ही आज वे जासूस नहीं हैं और राष्ट्रपति हैं, और भले ही आज उनकी कमर पर बंदूक नहीं लटकी होती (कम से कम सार्वजनिक रूप से), लेकिन उनका शरीर आज भी उसी तरह रिएक्ट करता है जैसे वह किसी मिशन पर हो।

सिर्फ पुतिन ही नहीं, अन्य रूसी अधिकारी भी हैं इसमें शामिल

इस थ्योरी को और बल तब मिला जब शोधकर्ताओं ने पाया कि पुतिन अकेले ऐसे रूसी नहीं हैं जो इस तरह चलते हैं. रूस के पूर्व प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव, पूर्व रक्षा मंत्री अनातोली सेरद्युकोव और सर्गेई इवानोव (KGB के पूर्व अधिकारी) भी लगभग इसी अंदाज में चलते हैं. यहां एक दिलचस्प पेंच है. पुतिन और इवानोव तो KGB में थे, इसलिए उनकी चाल समझ में आती है. लेकिन मेदवेदेव का कोई सैन्य या जासूसी बैकग्राउंड नहीं रहा है. वे तो वकील थे. फिर मेदवेदेव वैसी ही चाल क्यों चलते हैं? इसके लिए मनोवैज्ञानिकों ने बॉस की नकल का सिद्धांत दिया. मनोविज्ञान कहता है कि जब कोई व्यक्ति किसी बहुत प्रभावशाली लीडर के अधीन काम करता है या उससे प्रभावित होता है, तो वह अनजाने में या कभी-कभी जानबूझकर उसके हाव-भाव, बोलने का तरीका और चलने का अंदाज कॉपी करने लगता है।

मेदवेदेव के मामले में, यह माना जाता है कि उन्होंने शक्तिशाली दिखने के लिए पुतिन की चाल को अपनाया. यह रूस में सत्ता के गलियारों में वफादारी और ताकत दिखाने का एक तरीका बन गया. पुतिन की चाल 'अल्फा मेल' की निशानी बन गई, जिसे उनके वफादारों ने अपना लिया।

वाइल्ड वेस्ट का काउबॉय बनाम सोवियत जासूस

गनलिंगर गेट शब्द अमेरिकी 'वाइल्ड वेस्ट' के दौर से आया है. पुराने जमाने में अमेरिका में काउबॉय अपनी पिस्तौल अपनी कमर के निचले हिस्से पर बांधते थे. द्वंद्व युद्ध के दौरान, जो जितनी जल्दी पिस्तौल निकालता, वही जिंदा बचता. इसलिए वे चलते समय अपने दाहिने हाथ को होल्स्टर के पास ही रखते थे. यह देखना कितना विरोधाभासी और दिलचस्प है कि अमेरिका का कट्टर विरोधी रहा सोवियत संघ और उसका सबसे बड़ा जासूस, अमेरिकी काउबॉय जैसी तकनीक का इस्तेमाल करता था. फर्क सिर्फ इतना है कि काउबॉय इसे खुलेआम करते थे, और KGB एजेंट्स इसे गुप्त ऑपरेशन्स के लिए सूट-बूट के नीचे छिपाकर करते थे।

पुतिन की 'माचो मैन' छवि और यह चाल

व्लादिमीर पुतिन अपनी छवि को लेकर बेहद सजग रहते हैं. दुनिया ने उन्हें भालू की सवारी करते , साइबेरिया में शर्ट उतारकर मछली पकड़ते, फॉर्मूला-1 कार चलाते और बाघ को बेहोश करते हुए देखा है. यह बंदूक वाली चाल उनकी इस कठोर और मजबूत नेता की छवि में पूरी तरह फिट बैठती है. एक हाथ का आजाद झूलना और दूसरे का स्थिर रहना कंट्रोल को दर्शाता है. यह दिखाता है कि उनका अपने शरीर और अपने आस-पास के माहौल पर पूरा कंट्रोल है।

क्या कोई और कारण भी हो सकता है?

हालांकि KGB ट्रेनिंग वाली थ्योरी सबसे ज्यादा मान्य है, लेकिन कुछ अन्य सिद्धांत भी समय-समय पर सामने आते रहे हैं, जिन्हें पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता. एर्ब्स पाल्सी थ्योरीः कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि हो सकता है पुतिन को जन्म के समय 'शोल्डर डिस्टोसिया' हुआ हो, जिससे उनके दाहिने कंधे की नसों में खिंचाव आ गया हो. इससे हाथ की मूवमेंट थोड़ी सीमित हो सकती है. लेकिन चूंकि वे जुडो में इसी हाथ का इस्तेमाल बखूबी करते हैं, इसलिए यह थ्योरी कमजोर पड़ जाती है।

चोट का निशानः पुतिन जुडो फाइटर रहे हैं. हो सकता है कि जवानी के दिनों में ट्रेनिंग के दौरान उनके दाहिने कंधे या बांह में कोई गंभीर चोट लगी हो, जिसकी वजह से वह चलते समय उसे स्थिर रखना पसंद करते हों ताकि दर्द न हो या आदत बन गई हो.लेकिन प्रोफेसर ब्लोम और उनकी टीम का तर्क है कि अगर यह चोट होती, तो हाथ की ताकत कम होती, जबकि पुतिन का दाहिना हाथ बेहद मजबूत है. इसलिए, 'बिहेवियरल अडॉप्टेशन' यानी ट्रेनिंग ही सबसे सही जवाब लगता है।

नवनीत सहगल ने प्रसार भारती बोर्ड के अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा दिया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- पूर्व आईएएस अधिकारी नवनीत कुमार सहगल ने अपने कार्यकाल के मध्य में ही मंगलवार (2 दिसंबर) को प्रसार भारती बोर्ड के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया, जिसे केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा बुधवार को स्वीकार भी कर लिया गया है. मालूम हो कि नवनीत कुमार सहगल को मार्च 2024 में प्रसार भारती का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था और उनका कार्यकाल तीन साल का था. हालांकि, उन्होंने अपनी सेवा के डेढ़ साल बाद ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया है.

उल्लेखनीय है कि प्रसार भारती एक स्वायत्त वैधानिक निकाय है, जो अन्य कार्यों के अलावा दूरदर्शन प्रसारण सेवा और आकाशवाणी रेडियो सेवा का संचालन करता है. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रसारण प्रशासन कार्यक्रम के निदेशक एएम कुमार द्वारा बुधवार को लिखे गए एक पत्र में सहगल को सूचित किया गया कि उन्हें प्रसार भारती के अध्यक्ष पद से तत्काल प्रभाव से मुक्त कर दिया गया है।

ज्ञात हो कि सहगल 1988 बैच के उत्तर प्रदेश कैडर के आईएएस अधिकारी हैं. प्रसार भारती में उनकी नियुक्ति से पहले अध्यक्ष का पद करीब चार साल से खाली पड़ा था. सहगल की नियुक्ति के वक्त लोकसभा चुनावों में कुछ ही हफ्ते बाकी थे. सहगल से पहले ए. सूर्य प्रकाश प्रसार भारती के अध्यक्ष थे, जिन्होंने फरवरी, 2020 में अपना कार्यकाल पूरा किया था. नवनीत सहगल अपनी नियुक्ति से पहले वह जुलाई 2023 में उत्तर प्रदेश सरकार में अतिरिक्त मुख्य सचिव के पद पर सिविल सेवा से सेवानिवृत्त हुए थे।

सहगल का चयन तीन सदस्यीय चयन समिति ने किया था, जिसकी अध्यक्षता उस समय के उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने की थी. समिति में प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की चेयरपर्सन रंजन प्रकाश देसाई और राष्ट्रपति द्वारा नामित एक सदस्य भी शामिल थे. प्रसार भारती की वेबसाइट के अनुसार, सहगल के पास केंद्र और उत्तर प्रदेश, दोनों स्तरों पर नीतिगत सुधार और बड़े विभागों के संचालन में 35 वर्षों से अधिक का अनुभव का उल्लेख किया गया है.

इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट में बताया गया है कि सहगल को बहुजन समाज पार्टी प्रमुख और उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के सबसे भरोसेमंद अधिकारी के रूप में जाना जाता था. इसके बाद राज्य में सत्तासीन हुई समाजवादी पार्टी और भाजपा सरकारों में भी सहगल का प्रभाव था. उन्हें उद्योगपतियों, फिल्म जगत के लोगों और खेल संगठनों से करीबी संबंध रखने वाला अधिकारी माना जाता है।

ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे ने पीएसी पर टीकाकरण उत्सव का किया शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बस्ती। बस्ती जिले के पीएचसी कुदरहा पर टीकाकरण उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें नवजात शिशुओं का टीकाकरण किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे व प्रभारी चिकित्साधिकारी डा अश्वनी यादव ने फीता काट कर किया ब्लाक प्रमुख अनिल दुबे ने कहा कि अवोध बच्चो को टीका लगवाना बेहद जरूरी है। जिससे गंभीर बीमारियो से बचाया जा सकता है। सभी लोग बच्चो को टीका लगवाये। प्रभारी चिकित्साधिकारी डा अश्वनी यादव ने बताया कि शून्य से सात वर्ष के बच्चों को टीकाकरण किया जायेगा। जो भी शिशु किहीं कारण वश अब तक टीकाकरण से वंचित रह गए है वे अवश्य टीका लगवा ले। प्रधान संघ अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी, भाजपा नेता महंथ पाल, पंकज पांडेय, पवन सिंह, जेपी वर्मा, रमेश चौधरी सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त ख़बरें

अनाज बेचकर जा रहे किसान पर जानलेवा हमला

ललितपुर। कल्यानपुरा निवासी नरेंद्र परिहार पुत्र हन्नाम परिहार ने पुलिस को शिकायती पत्र दिया है। बताया कि 1 दिसम्बर को शाम करीब 7 बजे वह गल्ला मंडी से अनाज बेचकर जा रहा था। तभी गांव के नीलू विश्वकर्मा पुत्र रामनारायण अपने 3-4 अज्ञात साथियों के साथ आया और उसे गालियां देने लगा। मना करने पर उक्त लोगों ने उसके साथ मारपीट करते हुये सिर में डंडा दे मारा, जिससे वह लहूलुहान हो गया। आरोप है कि नीलू काफी आपराधिक किस्म का व्यक्ति है और उसे जान का खतरा बना हुआ है। मामले में पुलिस ने नीलू विश्वकर्मा के खिलाफ मामला दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

मारपीट कर घायल करने का आरोप

ललितपुर। निकटवर्ती ग्राम कल्यानपुरा निवासी रेखा देवी पत्नी हरपाल सिंह राजपूत ने पुलिस को तहरीर दी है। बताया कि दो दिसम्बर को सुबह 7 बजे वह घर पर थी, तभी विद्या पत्नी जगदीश राजपूत आयी और गालियां देने लगी। विरोध करने पर विद्या ने अपने पुत्र हिमांशु व पुत्री मुस्कान के साथ एक राय होकर मारपीट कर दी। शोरगुल होने पर बचाने आये पति हरपाल तो हरिपुरा निवासी विद्या के पिता परताप व भाई प्रवेश ने भी मारपीट करते हुये जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने महिला की तहरीर पर बीएनएस की धारा 191 (2), 352, 115 (2), 351 (3) के तहत एफआईआर दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी।

यूपी में एसआईआर ड्यूटी का बोझः 12 दिन में 10 बीएलओ की मौत, कई ने दी आत्महत्या की धमकी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- उत्तर प्रदेश में चल रहे स्पेशल इंटेंसिव रिविज़न (एसआईआर) अभियान ने इस हफ़्ते एक और गंभीर मोड़ ले लिया है. बरेली में एक बीएलओ की ब्रेन हैमरेज से मौत हो गई, मेरठ में एक अन्य बीएलओ ने आत्महत्या की कोशिश की, और बुलंदशहर में एक प्राइमरी स्कूल की शिक्षिका ने अपनी जान देने की धमकी दी. उनका कहना है कि एसआईआर के काम से उन पर असहनीय दबाव डाला जा रहा है।

इन घटनाओं के बाद, पिछले 12 दिनों में पूरे यूपी में बीएलओ की मौतों की संख्या 10 हो गई है, जिनमें तीन आत्महत्याएं शामिल हैं. बरेली में एमबी इंटर कॉलेज के प्रवक्ता और बीएलओ अजय अग्रवाल (51) की सोमवार देर रात मौत हो गई. वे एसआईआर ड्यूटी से घर लौटे थे. परिवार का कहना है कि 24 नवंबर से उन्हें डेटा-फीडिंग का काम दिया गया था, जिसकी वजह से वे बेहद तनाव में थे और यह काम उन्हें एक साधारण मोबाइल फोन पर करना पड़ रहा था. उनके बेटे प्रखर ने कहा, 'उन्होंने अधिकारियों से कहा था कि उन्हें एंड्रॉयड फोन चलाना भी नहीं आता, इसलिए उनके लिए डेटा अपलोड करना मुश्किल होगा. लेकिन किसी ने बात नहीं सुनी. जब भी वे दिक्कत महसूस करते, अधिकारी उन्हें डांट देते थे. वे लगातार कहते थे कि उन पर बहुत ज़्यादा काम का बोझ है और वो इसे संभाल नहीं पा रहे हैं.' अजय अपने बीमार पत्नी और बेटे को पीछे छोड़ गए हैं. बरेली के जिलाधिकारी अविनाश सिंह से इस मामले पर टिप्पणी नहीं मिल सकी. वहीं, सूबे के ही मेरठ में सिंचाई विभाग के क्लर्क और बीएलओ मोहित कुमार (लगभग 30 या आसपास की उम्र) ने

मंगलवार रात ज़हर खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की. उनकी पत्नी ने आरोप लगाया कि 'वरिष्ठ अधिकारियों के लगातार दबाव' ने उन्हें इस स्थिति तक पहुंचा दिया. ज्योति देवी ने कहा, 'मैं बस यही चाहती हूं कि किसी और पर मेरे पति जैसा दबाव न डाला जाए. हाथ जोड़कर मेरी सभी से विनती हैः कम से कम उन्हें ठीक से ट्रेनिंग देकर भेजें. यह कहना कि उन्हें ट्रेनिंग दी गई थी- एक झूठ है. असल में कोई ट्रेनिंग कभी दी ही नहीं गई.' हालांकि, मेरठ के डीएम वीके सिंह ने इन आरोपों को खारिज कर दिया और कहा, 'बूथ लेवल अधिकारी मोहित कुमार का काम संतोषजनक था. उन्होंने कीटनाशक क्यों खाया, यह जांच का विषय है. वह अब खतरे से बाहर हैं और उन्हें सर्वोत्तम इलाज दिया जा रहा है।'

सुसाइड की धमकी

इस बीच, बुलंदशहर में प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका रजनी ने वॉट्सऐप पर एक लिखित आत्महत्या की धमकी भेजी, जिसमें उन्होंने कहा कि वह अपनी बीएलओ ड्यूटी से जुड़े 'काम के बोझ और उत्पीड़न' को अब और सहन नहीं कर सकतीं. उन्होंने संदेश में लिखा, 'मैं पहले ही दिए गए काम का 50% से ज़्यादा पूरा कर चुकी हूं, फिर भी अधिकारी बार-बार अपने निर्देश बदल रहे हैं. पहले उन्होंने कहा कि सभी फ़ॉर्म बांट दो; फिर अचानक जल्दी-जल्दी वे फ़ॉर्म वापस मांग लिए और मुझ पर ऑनलाइन डेटा अपलोड करने का दबाव बनाने लगे.' ये घटनाएं उन कई मौतों की पृष्ठभूमि में सामने आई हैं जो हाल के दिनों में एसआईआर ड्यूटी के दौरान हुई हैं. इससे पहले हाथरस में एक 45 वर्षीय सरकारी शिक्षक की मंगलवार सुबह मौत हो गई, जब वह बीएलओ ड्यूटी पर जाने की तैयारी कर रहे थे; उनकी पत्नी ने इस मौत का कारण काम का तनाव बताया।

संभल में हेडमास्टर अरविंद कुमार (40) की भी ड्यूटी के दौरान मौत हो गई, और उनके परिवार ने भी गंभीर दबाव को कारण बताया. उल्लेखनीय है कि बीते सप्ताह मुरादाबाद में 40 वर्षीय सहायक शिक्षक सर्वेश सिंह ने आत्महत्या कर ली. उन्होंने एक नोट में डिजिटल अपलोड के दबाव, नींद की कमी और निलंबन के डर का ज़िक्र किया था. फतेहपुर में लेखपाल सुधीर कुमार कुरील (27) ने अपनी शादी से एक दिन पहले आत्महत्या कर ली, कथित तौर पर उन्हें नौकरी से बर्खास्त करने की धमकी दी गई थी. गोंडा में 35 वर्षीय सहायक शिक्षक विपिन यादव ने ज़हर खा लिया, और उनकी पत्नी ने एक वीडियो रिकॉर्ड कर कहा कि उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा था. इसी तरह चार और कर्मचारी- बिजनौर की शोभा रानी (56), बरेली के सर्वेश कुमार गंगवार (47), लखनऊ के विजय कुमार वर्मा (40) और देवरिया की रंजू दुबे (44) ड्यूटी पर रहते हुए मौत हुई है. उनके परिवार वालों ने भी दावा किया।

संचार साथीः सरकार को क्यों वापस लेना पड़ा ऐप को अनिवार्य रूप से प्री-लोड करने का आदेश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- प्राइवेसी एक्सपर्ट, साइबर सुरक्षा जानकारों और विपक्ष की कड़ी आलोचना के बाद केंद्र सरकार ने 'संचार साथी' ऐप को अनिवार्य रूप से प्री-इंस्टॉल करने के आदेश को वापस लेने की घोषणा की है. बुधवार (3 दिसंबर) को जारी एक बयान में संचार मंत्रालय ने कहा कि ऐप की 'बढ़ती स्वीकार्यता' को देखते हुए यह फैसला लिया गया है. संचार साथी पोर्टल मई 2023 में मोदी सरकार द्वारा लॉन्च किया गया था. इस पोर्टल के ज़रिए नागरिक अपने आईडी से लिंक मोबाइल कनेक्शनों की जांच कर सकते हैं, धोखाधड़ी या स्कैम की शिकायत दर्ज कर सकते हैं और खोए हुए फोन का पता लगा सकते हैं. संचार साथी का मोबाइल ऐप इस साल की शुरुआत में लॉन्च किया गया था, जिसका उद्देश्य साइबर अपराध से निपटने में मदद करना है।

केंद्र ने यह अनिवार्यता क्यों वापस ली?

भारतीय सरकार ने स्मार्टफोन कंपनियों से कहा था कि वे सभी नए स्मार्टफोन्स में यह ऐप अनिवार्य रूप से पहले से इंस्टॉल करें. इसी

वजह से विवाद शुरू हुआ. इस आदेश के तहत, उपयोगकर्ता इस ऐप को न तो बंद कर सकते थे, न इसकी सीमाएं तय कर सकते थे और न ही इसे फोन से हटा सकते थे. इस कदम की कड़ी आलोचना होने लगी, क्योंकि कई लोगों ने इसे नागरिकों के निजता के मौलिक अधिकार का उल्लंघन बताया. इस अनिवार्यता का मूल आदेश 28 नवंबर को जारी किया गया था, जिसमें कहा गया था कि यह ऐप ऐसे तरीके से इंस्टॉल किया जाए कि उपयोगकर्ता इसे न हटाने सकें और न ही बंद कर सकें. हालांकि सरकार का कहना है कि इस ऐप को प्री-इंस्टॉल करने का आदेश उसकी 'बढ़ती लोकप्रियता' के कारण वापस लिया गया, लेकिन मामले से जुड़े लोगों की राय अलग है. इस मामले से जुड़े सूत्रों ने बताया कि दूरसंचार विभाग पर इंडस्ट्री की ओर से आदेश वापस लेने का 'बहुत ज़्यादा दबाव' था. स्रोतों ने आगे कहा कि केंद्र सरकार ने इस आदेश पर काम करते समय अनौपचारिक रूप से कुछ कानूनी फ़र्मों से भी सलाह ली थी, जहां उन्हें बताया गया था कि यह निर्देश संविधान के टेस्ट पर खरा नहीं उतरेगा. इसके अलावा, सूत्रों के हवाले से रॉयटर्स ने रिपोर्ट किया कि स्मार्टफोन कंपनियां एप्पल और सैमसंग ने भी संचार साथी को प्री-इंस्टॉल करने के सरकारी आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया था।

केंद्र ने संचार साथी का बचाव किया

व्यापक विरोध के बाद, सरकार ने ऐप का बचाव किया और कहा कि यदि उपयोगकर्ता चाहे तो संचार साथी ऐप को अपने फोन से हटा सकते हैं. हालांकि, नई चिंताएं भी सामने आईं, जैसे कि क्या यह ऐप सरकार के लिए 'जासूसी करने वाले टूल' में बदल सकता है. इन आरोपों पर प्रतिक्रिया देते हुए, संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने लोकसभा में कहा कि यह ऐप उपयोगकर्ता के निजी डेटा तक पहुंच नहीं रखता और इसे 'जासूसी' के लिए इस्तेमाल करना 'संभव नहीं' है. सिंधिया ने प्रश्नकाल के दौरान कहा, 'संचार साथी ऐप से जासूसी न तो संभव है और न ही होगी।'

राम मंदिर में धर्म ध्वजा फहराया जाना भारतीय सभ्यता की विरासत को आगे बढ़ाने का प्रतीकः योगी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोरखपुर- उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बृहस्पतिवार को कहा कि अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर के शिखर पर पिछले माह धर्म ध्वजा फहराया जाना हर भारतीय के लिए गर्व का पल है और यह देश की अटूट सभ्यता की विरासत में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। मुख्यमंत्री ने गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि राम जन्मभूमि स्थल पर भव्य मंदिर का निर्माण और धर्म ध्वजा का फहराया जाना भारत की सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाता है। उन्होंने कहा, '' यह हमारी सभ्यता की यात्रा में मील का एक महत्वपूर्ण पत्थर है जो हर भारतीय को इस विरासत का वारिस होने पर गर्व महसूस कराता है।'' प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गत 25 नवंबर को अयोध्या में राम मंदिर के शिखर पर धर्म ध्वजा फहराया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत की पहचान उसकी संस्कृति, परंपराओं और राष्ट्रीय प्रतीकों में है और सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण से राष्ट्रीय एकता कमजोर होती है। उन्होंने महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज, गुरु गोबिंद सिंह और रानी लक्ष्मीबाई जैसे ऐतिहासिक लोगों और देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले सपूतों के योगदान को याद करते हुए कहा कि उनकी हिम्मत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। आदित्यनाथ ने इस बात पर जोर दिया कि त्योहार और परंपराएं राष्ट्रीय मूल्यों को मजबूत करती हैं। साथ ही लोगों को सामाजिक मतभेदों से ऊपर उठाकर एक साथ लाती हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'पांच वादे' भी बताए और कहा कि इनसे देश को अपनी विरासत से फिर से जुड़ने, उपनिवेशवाद की सोच को खत्म करने और सेना के प्रति सम्मान को फिर से पक्का करने में मदद मिली है। आदित्यनाथ ने कहा, ''राष्ट्रीय पहचान को जाति, क्षेत्र और भाषा के बंटवारे से ऊपर उठाया जाना चाहिये। अगर हम इन पांच संकल्पों को साधते हैं तो कोई कारण नहीं है कि भारत पूरी तरह से विकसित देश न बन सके।'

भारत का स्ट्राइक मोडः ब्रह्मोस ने जो कहा, दुनिया ने सुन लिया

[ब्रह्मोस कॉम्बैट लॉन्चः शक्ति नहीं, भविष्य की परिभाषा]
[लांच नहीं, संदेश थाः भारत अब शर्तें तय करने वाली शक्ति है]

बंगाल की खाड़ी की उस सुबह में एक अनोखी खामोशी पसरी थी, मानो प्रकृति किसी अदृश्य दैत्य-शक्ति के उद्भव से पहले ठहर गई हो। और फिर अचानक एक दहकती गर्जना ने आसमान को वैसे चीर डाला, मानो किसी अदृश्य महाशक्ति ने अपने अटल संकल्प को सीधे नभ की देह पर तराश दिया हो। यह कोई सामान्य मिसाइल परीक्षण नहीं था; यह भारत का 21वीं सदी की सामरिक राजनीति में अडिग, निर्भीक ऐलान था—भारत अब परिस्थितियों का शिकार नहीं, बल्कि परिस्थितियों की दिशा तय करने वाली शक्ति है। ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल का यह कॉम्बैट लॉन्च केवल तकनीक का प्रदर्शन नहीं, बल्कि भारत की सामरिक चेतना का सजीव, जलता हुआ प्रमाण था। इसने शत्रुओं को साफ चेताया कि भारत की सीमा-सुरक्षा को चुनौती देना अब किसी भी कीमत पर सुरक्षित दांव नहीं। साथ ही, इसने मित्र राष्ट्रों को आश्वस्त किया कि हिंद महासागर का सामरिक संतुलन अब निर्णायक रूप से भारत की दृढ़ पकड़ में सुरक्षित है। यह लॉन्च केवल शक्ति का इज़हार नहीं, शक्ति की भाषा को नए सिरे से लिख देने वाला क्षण था। 1 दिसंबर 2025 को भारतीय सेना की साउदर्न कमांड की ब्रह्मोस यूनिट ने एंडमान और निकोबार कमांड के सहयोग से जो परीक्षण किया, वह मात्र तकनीकी सफलता नहीं था—यह रणनीतिक दूरदर्शिता, मनोवैज्ञानिक बढ़त और आत्मनिर्भर रक्षा क्षमता का एक ऐसा संगम था जिसे अनदेखा करना किसी भी राष्ट्र के लिए असंभव है। ब्रह्मोस ने 2.8 मैक की दहकती रफ्तार से आकाश को चीरते हुए 290 किलोमीटर दूर स्थित लक्ष्य को इतनी नपे-तुले प्रहार-निपुणता से खत्म किया कि मानो लक्ष्य अस्तित्व में था ही नहीं। इसी एक पल ने दुनिया को साफ़ कर दिया कि भारत की स्ट्राइक क्षमता अब केवल सक्षम नहीं—बहुआयामी, परिपक्व, आक्रामक और हर क्षण युद्ध-सिद्ध है। जो कभी रूस के साथ 49:51 का संयुक्त प्रयास था, उसी मिसाइल का आज 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सा—मुख्य सेंसर, सीकर, बूस्टर और कई महत्वपूर्ण सब-सिस्टम—पूरी तरह भारतीय हाथों की देन है, और स्वदेशी घटकों का हिस्सा तेज़ी से 85 प्रतिशत के स्तर की ओर बढ़ रहा है। यह मिसाइल सिर्फ़ तकनीक का ढांचा नहीं; यह 'आत्मनिर्भर भारत' की वह प्रगति है जो ज़मीन की सीमाओं से आगे बढ़कर सागरों, आकाश और आने वाले अंतरिक्षीय आयामों में अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही है। ब्रह्मोस का यह तीव्र भारतीयकरण महज़ एक उपलब्धि नहीं—यह भारत के उभरते रक्षा-उद्योग की परिपक्वता का ठोस, अविचलित और वैश्विक स्तर पर स्वीकार्य प्रमाण है। इस परीक्षण का सबसे प्रबल संदेश उसकी टाइमिंग में छिपा था। जब चीन दक्षिण चीन सागर से लेकर हिंद महासागर तक अपनी नौसैनिक सरगर्मियाँ तेज़ कर शक्ति-प्रदर्शन में जुटा है, जब पाकिस्तान सीमित हथियारों के सहारे क्षेत्रीय अस्थिरता को हवा देने की कोशिश में लगा है—ठीक उसी दौर में भारत का यह परीक्षण साफ घोषणा बनकर उभरा कि हिंद महासागर अब भारत की सामरिक सीमारेखा है, और इस क्षेत्र की स्थिरता पर अंतिम शब्द भारत का ही होगा। ब्रह्मोस का यह प्रहार किसी एक लक्ष्य का विनाश नहीं था; यह उस भ्रम का विध्वंस था जो भारत की शांति-प्रियता को भूलवश कमजोरी समझने की भूल करता रहा है। लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ की टिप्पणी बिल्कुल सटीक थी—यह मात्र तकनीकी उपलब्धि नहीं, बल्कि भारत की बढ़ती शक्ति, आत्मनिर्भरता और निर्णायक तैयारी का ठोस प्रमाण है। ब्रह्मोस की वास्तविक ताकत उसकी गति से कहीं आगे है; उसकी असली शक्ति उस भय में है जो वह दुश्मन की योजना में पैदा करती है। कम ऊंचाई पर तीव्र गति से उड़ान भरने वाली यह मिसाइल न तो आसानी से रडार में आती है और न ही रोकी जा सकती है, इसकी गति से बचने का मतलब पहले से हार स्वीकार करना है। जब ऐसी घातक क्षमता वाली मिसाइल इस गति से मेक-इन-इंडिया रूप ले रही हो, तो उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव दोगुना नहीं, कई गुना बढ़ जाता है। एंडमान और निकोबार आज केवल एक द्वीप-समूह नहीं, भारत की सामरिक ढाल का वह धारदार किनारा बन चुका है जिसे दुनिया अब 'एयरक्राफ्ट कैरियर किलर ज़ोन' के रूप में पहचानने लगी है। यहां से तैनात बढ़ी हुई रेंज वाली ब्रह्मोस (600+ किमी) मलक्का स्ट्रेट तक हर हलचल को अपनी निगरानी और नियंत्रण की सीमा में समेट लेती है—यानी हिंद-प्रशांत की धड़कन अब भारत की मुट्ठी में धड़कती है। इसी कारण इस परीक्षण के बाद क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन की दिशा पर विश्व की निगाहें एक बार फिर भारत पर आ टिकना स्वाभाविक था—क्योंकि संदेश बिल्कुल वहीं पहुँचा, जहाँ उसे पहुँचना चाहिए था। यह उपलब्धि केवल सेना की दक्षता का परिणाम नहीं, बल्कि डीआरडीओ, एचएएल, भारतीय निजी क्षेत्र और हजारों युवा वैज्ञानिकों की अनगिनत रातों की तपस्या का सार है। उन्होंने ब्रह्मोस को सिर्फ़ अधिक स्वदेशी नहीं बनाया, बल्कि उसे दुनिया की सबसे तेज़, सबसे भरोसेमंद और सबसे सटीक सुपरसोनिक स्ट्राइक मिसाइलों के शिखर पर स्थापित कर दिया। और अब भारत की नजरें अगले आयाम पर हैं—हाइपरसोनिक ब्रह्मोस। 2028 तक 7-8 मैक की रफ्तार और 1000+ किमी रेंज वाली इस मिसाइल का परीक्षण दुनिया को एक नई वास्तविकता से रूबरू करा देगाः भारत सिर्फ़ भविष्य की जंगों के लिए तैयार नहीं, बल्कि भविष्य की युद्ध-परिभाषा को पुनर्लेखित करने की राह पर अग्रसर है। जब कोई यह पूछे कि भारत ने पिछले दशक में रक्षा क्षेत्र में कैसी तरक्की की है, तो लंबे जवाबों की जरूरत ही नहीं। बस ब्रह्मोस की वह गूंज याद दिला दीजिए, जिसने उस सुबह समंदर और आसमान दोनों को हिला दिया था। कुछ संदेश शब्दों से नहीं, क्षमता के प्रदर्शन से समझ आते हैं। और ब्रह्मोस ने फिर वही भाषा बोली—तेज़ी, भरोसे, सटीकता और दृढ़ इच्छाशक्ति की भाषा। ऐसी भाषा, जिसे दुनिया सम्मान से सुनती है और जिसे देखकर विरोधी दो कदम पीछे हट जाते हैं।

प्रो. आरके जैन

स्वाधीनता के संघर्ष, स्वाभिमान से उपजी भारत की एकता और अखंडता राष्ट्र सर्वोपरि

भारत की स्वतंत्रता अनगिनत बलिदानों, त्याग, तप और संघर्ष की अमूल्य विरासत है। लगभग आठ सौ से हजार वर्षों की परतंत्रता के बाद, जब विदेशी शासन की दासता से मुक्त होने के लिए लाखों भारतीयों ने अपने प्राणों की आहुति दी, तब जाकर हमें स्वतंत्रता का वह अमृत प्राप्त हुआ जिसे हम आज खुले आकाश के नीचे निरंतर सांस लेते हुए अनुभव करते हैं। यह स्वतंत्रता केवल राजनीतिक उपलब्धि नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के स्वाभिमान, साहस और एकता की अनुपम साधना का परिणाम है। इसलिए यह हमारा पवित्र दायित्व है कि हम इस स्वतंत्रता को, इस अखंडता को और इस राष्ट्रीय आत्मा को अनंतकाल तक अक्षुण्ण बनाए रखें। राष्ट्र की एकता केवल संविधान के पन्नों या शासन की व्यवस्था से सुनिश्चित नहीं होती, बल्कि नागरिकों की चेतना, परस्पर सम्मान, सामाजिक समरसता और राष्ट्रभक्ति की अंतर्मन की प्रतिज्ञा से निर्मित होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता का स्वरूप और अधिक मजबूत हुआ, परंतु आज दुर्भाग्यपूर्ण राजनीतिक मंसूबों, स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों और विचारधारात्मक विभाजन ने समाज में संप्रदाय, भाषा, जाति और क्षेत्र के नाम पर दरारें पैदा करने का प्रयास किया है। मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा-चर्च, हिंदी-अंग्रेजी-उर्दू-पंजाबी-तेलुगु-असमी जैसे विवाद हमारे हृदय में ऐसे ही घाव हैं जो राष्ट्रीय एकता को कमजोर करने का प्रयास करते हैं। वस्तुतः राष्ट्रीय अखंडता बनाए रखने के लिए हमें सांप्रदायिक विद्वेष, ईर्ष्या, भाषाई और सीमाई विवादों से ऊपर उठकर सामाजिक सौहार्द, मानवीय गरिमा और राष्ट्र की समग्रता को प्राथमिकता देनी होगी, तभी हम विकास की मुख्यधारा में सार्थक योगदान दे पाएंगे। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने कहा था कि 'भारत विश्व का एकमात्र राष्ट्र है जहाँ मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारों का सहअस्तित्व सर्वधर्मसमभाव के अद्वितीय स्वरूप में विद्यमान है।' यह कथन भारत के आध्यात्मिक और सामाजिक चरित्र का आदर्श प्रतिबिंब है। परंतु वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर आतंकवाद शांति, सद्भावना और किसी भी राष्ट्र की अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर उभरा है। कभी अमेरिका, तो कभी भारत के दिल्ली, मुंबई और अनेक राज्यों में आतंकवाद ने अपनी विभीषिका से भारी जनहानि और संपत्ति विनाश का अंधकार फैलाया है। इसके अतिरिक्त अलगाववादियों ने भी राष्ट्र की परंपरागत एकता और अखंडता को विखंडित करने का निरंतर प्रयास किया है। कुछ राजनीतिक शक्तियों ने वोट बैंक की राजनीति में उलझकर अलगाववाद और साम्प्रदायिकता का बीजारोपण किया है—कभी अल्पसंख्यकों के नाम पर विभाजन, कभी जाति और आरक्षण के नाम पर भ्रम और विद्वेष की स्थापना कर समाज को बांटने का दुर्भावनापूर्ण प्रयास किया है। यह राजनीति का सबसे निंदनीय और चिंतनीय स्वरूप है, जिस पर राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। वास्तविकता यह है कि सामान्य सामाजिक स्तर पर हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और अन्य सभी वर्ग अत्यंत सौहार्द, सद्भावना और भाईचारे में विश्वास रखते हैं। परंतु स्वार्थी तत्व इन संबंधों को तोड़कर समाज को संघर्ष और अविश्वास की आग में धकेल देते हैं। राष्ट्रीय अखंडता बनाए रखने की जिम्मेदारी मात्र राजनेताओं या प्रशासन पर नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक पर समान रूप से है। हमें यह दृढ़ संकल्प लेना होगा कि राष्ट्र सर्वोपरि है—धर्म, जाति, भाषा, प्रदेश या दल से बढ़कर। यदि हम इतिहास के पन्नों को देखें तो अनेक आक्रमणों, विदेशी शासन और सांस्कृतिक संघर्षों के पश्चात भी भारत की मूल अस्मिता बार-बार सशक्त होकर उभरी है। यहाँ अनेकों जातियाँ और समुदाय आए, उन्होंने अपनी परंपराएँ, भाषाएँ और संस्कृति साथ लाई, पर समय के साथ वे भारत की मुख्य धारा में समाहित होकर इसी मिट्टी का अभिन्न अंग बन गये। यही भारत की सांस्कृतिक एकरूपता का वैश्विक चमत्कार है, जिसकी शक्ति आज भी अक्षुण्ण है। इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम अपने कर्म, विचार और संकल्प से भारत की अखंडता, स्वतंत्रता और गौरव को विश्व पटल पर और अधिक सुदृढ़ स्थापित करें। राष्ट्र की सुरक्षा और समृद्धि तभी संभव है जब संचार माध्यम, मीडिया, साहित्यकार, कलाकार, युवा शक्ति और प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक अपने दायित्व को समझते हुए देश को सर्वोपरि रखें और विघटनकारी शक्तियों के विरुद्ध एकजुट होकर खड़े हों। इतिहास गवाह है कि जब भी भारत एकता के सूत्र में बंधा, वह विश्व में शक्ति बनकर उभरा; और जब भी विभाजित हुआ, वह कमजोर और असहाय सिद्ध हुआ।

अतः यह हमारा पुनीत कर्तव्य है कि हम अपने राष्ट्र की अस्मिता को किसी भी मूल्य पर खंडित न होने दें। हम सबको आज उसी भावना से उठना होगा, जिससे- 'भारत केवल भूमि का टुकड़ा नहीं, वह हमारी आत्मा है, हमारी संस्कृति है, हमारा गौरव है। 'आइए आज संकल्प लें—हम एक राष्ट्र, एक ध्वज, एक पहचान और एक संकल्प के साथ भारत की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता को अनंत काल तक बनाए रखेंगे। राष्ट्र सर्वोपरि—हम सबका प्रथम धर्म।

संजीव ठाकुर

वॉटर, वॉर और वीरताः नौसेना दिवस की कहानी

[नीला आकाश, नीला समंदर, और सफेद वर्दी का जज़्बा]
[सफेद वर्दी, लाल-जज़्बाः समुद्र की ओर भारत का गर्व]

जब समुद्र की लहरें तेज़ी से उठती हैं और युद्धपोतों की गड़गड़ाहट आसमान तक गूँजती है, तब पूरा भारत गर्व से भर उठता है—यही है नौसेना दिवस की सच्ची शक्ति। 4 दिसंबर का यह खास दिन वह पल है जब देश अपने समुद्री वीरों को दिल से सलाम करता है। यह कोई साधारण तारीख नहीं, बल्कि 1971 के भारत-पाक युद्ध की वह यादगार रात है जब भारतीय नौसेना ने कराची बंदरगाह पर ऐसा वार किया कि दुश्मन संभल ही नहीं पाया। ऑपरेशन ट्राइडेंट, जिसका नाम सुनते ही रोमांच दौड़ जाए। पहली बार किसी एशियाई देश ने एंटी-शिप मिसाइलों का इस्तेमाल किया, चार पाकिस्तानी जहाज़ डूब गए, कराची का बंदरगाह जल उठा और उनकी नौसेना बिखरकर रह गई। यह सिर्फ जीत नहीं, बल्कि समुद्री युद्ध के इतिहास में लिखा गया एक चमकता हुआ अध्याय था। तभी से 4 दिसंबर भारतीय नौसेना दिवस के रूप में पूरे देश में गर्व के साथ मनाया जाता है। लेकिन यह दिन सिर्फ इतिहास की वीरगाथा नहीं सुनाता, यह वर्तमान की ताकत और भविष्य की तैयारी का भी प्रमाण है। भारतीय नौसेना आज दुनिया की चौथी सबसे बड़ी और सबसे सक्षम नौसेनाओं में शुमार है। 67000 से ज्यादा जांबाज़ सैनिक, 150 से अधिक युद्धपोत, 250 से भी अधिक विमान और पनडुब्बियाँ—ये सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि हिंद महासागर में भारत की संप्रभुता का दस्तावेज़ है। आईएनएस विक्रांत - देश का पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत - जब समुद्र में उतरा, तब पूरी दुनिया ने देखा कि भारत अब सिर्फ खरीदार नहीं, बल्कि खुद अपनी शक्ति गढ़ने वाला राष्ट्र है। वहीं आईएनएस अरिहंत ने जब परमाणु त्रिशूल पूरा किया, तो बड़े-बड़े देश भी भारत की क्षमता के आगे गंभीर हो गए। बैलिस्टिक मिसाइलों से लैस यह पनडुब्बी दुश्मन के लिए साफ संदेश है—भारत की ओर आँख उठाई, तो कीमत भी चुकानी पड़ेगी और जवाब भी ऐसा मिलेगा कि याद रखना मुश्किल हो जाएगा। हिंद महासागर में भारतीय नौसेना आज सिर्फ रक्षक नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र का संतुलन संभालने वाली शक्ति है। मालदीव संकट में जब ऑपरेशन कैक्टस चला, श्रीलंका में आईपीकेएफ के दौरान जब नौसेना ने मानवीय मदद पहुँचाई, सुनामी की तबाही में जब हजारों जानें बचाई, और हाल ही में ऑपरेशन राहत व ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जब युद्धग्रस्त देशों से भारतीयों को सुरक्षित घर लाया गया—हर बार नौसेना ने साबित किया कि उसकी ज़िम्मेदारी केवल समुद्र की सुरक्षा तक सीमित नहीं है।

उसकी पहुँच वहाँ तक है, जहाँ तक भारत का एक भी नागरिक मौजूद है—चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हो। आज जब चीन अपनी 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' रणनीति से हिंद महासागर में घेरा कसने की कोशिश कर रहा है, भारतीय नौसेना बिल्कुल शांत बैठने वाली नहीं है। क्वाड का मजबूत सदस्य बनकर, मालाबार अभ्यास में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ कदम मिलाकर, फ्रांस के साथ वरुण अभ्यास में अपनी क्षमता दिखाकर, और रूस के साथ इंद्रा नौसैनिक अभ्यास में हिस्सा लेकर भारत ने दुनिया को साफ संदेश दे दिया है—हिंद महासागर में दबाव, धमकी या दादागिरी नहीं चलेगी। आईएनएस विक्रमादित्य, आईएनएस चक्र, ब्रह्मोस से लैस स्टील्थ फ्रिगेट्स और पी-8आई पोसाइडन विमान सिर्फ हथियार नहीं, बल्कि भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति और समुद्री शक्ति के चमकते प्रतीक हैं। लेकिन नौसेना की सच्ची शक्ति उसके लोहे के जहाज़ों में नहीं, बल्कि उन सफेद वर्दी वाले वीरों में बसती है। वे ही हैं जो महीनों अपने परिवार से दूर रहते हैं; जब तूफान जहाज़ को झकझोरता है, नीचे अथाह समुद्र और ऊपर दुश्मन की नज़र होती है—फिर भी उनके चेहरे पर मुस्कान रहती है। वे समुद्र की गोद में रातें काटते हैं, ताकि करोड़ों भारतीय चैन से सो सकें। उनकी आँखों में गहराई है, दिल में देशभक्ति की गर्मी और हाथों में अजेय साहस। और उनके पीछे खड़ी होती हैं वे माएँ जो बेटे के जहाज़ पर चढ़ते ही आशीर्वाद देती हैं, वे पत्नियाँ जो हर तूफान में प्रार्थना करती हैं, वे बच्चे जो दिन गिनते रहते हैं—यही मौन शक्ति नौसेना को अपराजेय बनाती है। हर साल नौसेना दिवस पर जब गेटवे ऑफ इंडिया के सामने जहाज़ सलामी देते हैं, जब मिग-29के आसमान को चीरते हुए दहाड़ते हैं, जब काले परिधान में मार्कोस कमांडो अपने रोमांचक करतब दिखाते हैं—तब हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। पर यह गर्व सिर्फ उस पल तक सीमित नहीं रहना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि यह नीली सीमा हमें यूँ ही नहीं मिली; इसे वीरों ने अपने जीवन से सुरक्षित किया है। कैप्टन महेंद्र नाथ मुल्ला, जिन्होंने आईएनएस खुकरी के डूबते समय जहाज़ के साथ समुद्र में समा जाना चुना, सिखाते हैं कि वर्दी से ऊपर कुछ भी नहीं। लेफ्टिनेंट कमांडर कपिश सिंह मुन्नो ने दुश्मन की पनडुब्बी को ध्वस्त कर दुनिया को दिखा दिया कि भारतीय वीरों की नसों में डर नहीं—दृढ़ता बहती है। 4 दिसंबर वह दिन है जब राष्ट्र अपने समुद्री क्षितिज को देख कर खुद से एक वादा करता है कि भारतीय नौसेना को हम और भी अजेय, और भी अतुल्य बनाएँगे। यह केवल जश्न मनाने का अवसर नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने का पल है। हम स्वदेशी जहाज़ों और हथियारों की शक्ति से वह आधार रचेंगे, जिस पर एक दिन दुनिया की सबसे मजबूत नौसेना का ध्वज गर्व से लहराएगा। यह दिन हमें याद दिलाता है कि समुद्र महज़ जलराशि नहीं—यह भारत की साँस, भारत की गति, भारत की जीवनरेखा है। हमारे 90 प्रतिशत से अधिक व्यापार का मार्ग इसी नीले विस्तार से होकर गुजरता है।

यदि यह मार्ग बाधित हुआ, तो न केवल हमारी सुरक्षा, बल्कि हमारी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था ठहर जाएगी। इसलिए नौसेना की ताकत देश की सीमाओं की रखवाली ही नहीं करती, बल्कि हर नागरिक की समृद्धि की रक्षा भी करती है। और इसी वजह से, इस नौसेना दिवस पर हमें केवल ताली बजाकर आगे नहीं बढ़ जाना चाहिए। हमें अपने बच्चों को उन जांबाज़ों की गाथाएँ सुनानी चाहिए, जिनकी सफेद वर्दी में भारत का गर्व, साहस और स्वाभिमान चमकता है। उन्हें समझाना चाहिए कि यह वर्दी सिर्फ कर्तव्य का वस्त्र नहीं—यह राष्ट्र की प्रतिष्ठा का प्रतीक है। उन्हें प्रेरित करना चाहिए कि वे भी एक दिन इस अथाह नीले प्रहरी का हिस्सा बनें। क्योंकि जब तक यह सफेद वर्दी समुद्र की लहरों पर शान से दमकती रहेगी, तब तक भारत की आन, बान और शान सुरक्षित, सशक्त और अडिग रहेगी। जय हिंद। जय भारतीय नौसेना।

प्रो. आरके जैन

संपादकीय

भारतीय नौसेना दिवस : समुद्री सीमाओं के प्रहरी

हर वर्ष 4 दिसंबर को भारत में नौसेना दिवस मनाया जाता है, और यह अवसर केवल एक औपचारिक उत्सव भर नहीं, बल्कि उन गहराइयों तक झांकने का निमंत्रण भी है जहाँ भारतीय नौसेना के जवान और अधिकारी अपने अदृश्य संघर्षों के साथ देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी निभाते हैं। स्थलीय सेनाओं का पराक्रम अक्सर हमारे सामने दृश्य रूप में उपस्थित रहता है, पर समुद्र के अनंत विस्तार में चौकसी करते नाविकों की कहानी प्रायः अनसुनी रह जाती है। नौसेना दिवस हमें उसी मौन पराक्रम की याद दिलाता है, जो बिना शोर किए, बिना रोशनी की मांग किए, राष्ट्र की संप्रभुता का कवच बनकर खड़ा है। 4 दिसंबर की तारीख भारतीय सैन्य इतिहास में विशेष महत्व रखती है क्योंकि यह 1971 के भारत-पाक युद्ध की उस निर्णायक रात की स्मृति है, जब भारतीय नौसेना ने दुनिया को चौंका देने वाला पराक्रम दिखाया। 'ऑपरेशन ट्राइडेंट' के नाम से प्रसिद्ध यह हमला केवल सामरिक कुशलता का उदाहरण नहीं था, बल्कि यह इस बात का प्रमाण भी था कि सीमित संसाधनों के बावजूद दृढ़ निश्चय और योजनाबद्ध युद्धक चातुर्य के बल पर बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना किया जा सकता है। मिसाइल बोटों से सुसज्जित भारतीय नौसैनिकों ने कराची बंदरगाह पर ऐसा प्रहार किया कि पाकिस्तान की समुद्री युद्ध क्षमता बुरी तरह प्रभावित हुई, कई जहाज नष्ट हुए, और भारतीय पक्ष को एक भी जहाज के नुकसान का सामना नहीं करना पड़ा। विश्व के युद्ध इतिहास में इतनी स्वच्छ, सटीक और प्रभावी नौसैनिक कार्रवाई के उदाहरण विरले ही मिलते हैं। इसी गौरव के कारण 4 दिसंबर को नौसेना दिवस चुना गया ताकि देश यह न भूले कि समुद्र की लहरों पर भी भारत का शौर्य उतना ही प्रखर है जितना भूमि सीमाओं पर। भारतीय नौसेना केवल युद्धकाल में ही नहीं, शांति के समय भी राष्ट्र के लिए अनिवार्य भूमिका निभाती है। भारत की समुद्री सीमा हजारों किलोमीटर तक फैली है और इसके साथ विशाल आर्थिक क्षेत्र भी जुड़ा है, जिसकी सुरक्षा सीधे-सीधे आर्थिक स्थिरता से संबंध रखती है। दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग हिंद महासागर से होकर गुजरते हैं—तेल, गैस, खाद्यान्न, और असंख्य प्रकार की आवश्यक वस्तुएँ इसी जलमार्ग के सहारे भारत तक पहुँचती हैं। इन मार्गों की सुरक्षा बनाए रखने का भार नौसेना के कंधों पर है, और समुद्री डकैती, तस्करी तथा गैरकानूनी गतिविधियों पर अंकुश लगाने में उसकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। हर वर्ष नौसैनिक युद्धपोत हजारों किलोमीटर की समुद्री गश्त करते हैं और अनेक ऐसी घटनाओं को रोकते हैं जो समाचारों तक भी नहीं पहुँचतीं, लेकिन देश की सुरक्षा को स्थिर बनाए रखने में निर्णायक साबित होती हैं। मानवीय सहायता और आपदा प्रबंधन भी नौसेना की पहचान का अभिन्न हिस्सा है। सुनामी हो, चक्रवात या किसी जहाज़ दुर्घटना की विकट रात—भारतीय नौसेना हमेशा अग्रिम पंक्ति में दिखाई देती है। अपने पड़ोसी देशों जैसे श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार और मोज़ाम्बिक में भी जब-जब संकट आया, भारतीय नौसेना ने बिना किसी राजनीतिक लाभ की अपेक्षा के, मानवता के आधार पर सहायता पहुँचाई। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय समुद्री क्षेत्र में भारत को 'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर' कहा जाने लगा है—एक ऐसा देश जिसका समुद्री प्रभाव भय पर नहीं, बल्कि भरोसे पर आधारित है। आज नौसेना दिवस के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि भारतीय नौसेना तेज़ी से स्वदेशीकरण की दिशा में आगे बढ़ रही है। आईएनएस विक्रांत—पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत—राष्ट्र की तकनीकी क्षमता और आत्मनिर्भरता का सशक्त प्रतीक है। आधुनिक विध्वंसक, फ्रिगेट, पनडुब्बियाँ और गश्ती जहाज भारतीय शिपयार्ड में बन रहे हैं, और डिज़ाइन से निर्माण तक, भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों की भूमिका पहले से कहीं अधिक निर्णायक है। यह केवल सुरक्षा का प्रश्न नहीं, बल्कि औद्योगिक विकास, तकनीकी नवाचार और राष्ट्रीय आत्मगौरव का भी प्रतीक है। जब कोई युवा किसी स्वदेशी युद्धपोत को देखता है, तो उसके सामने केवल एक जहाज नहीं, बल्कि देश के परिश्रम, बुद्धि और जिजीविषा की साकार तस्वीर खड़ी होती है। नौसेना दिवस मनाते समय उन सैनिकों के निजी संघर्षों को भी समझना जरूरी है जो समुद्र में महीनों तक तैनात रहते हैं। अनिश्चित मौसम, तूफानी लहरें, सीमित जगह और निरंतर तकनीकी सतर्कता के बीच उनका हर दिन एक चुनौती होता है। वे जिन जहाजों या पनडुब्बियों पर रहते हैं, वे अपने आप में एक चलती-फिरती दुनिया होती हैं, जहाँ अनुशासन और टीमवर्क ही जीवन का आधार है। इन वीरों के परिवार भी एक विशेष प्रकार की सीमा पर तैनात रहते हैं—इंतज़ार की सीमा पर। उनका धैर्य, उनका साहस और उनका मौन त्याग भी उतना ही सम्माननीय है जितना किसी सैनिक की वर्दी। ऐसे समय में नौसेना दिवस का सामाजिक संदेश और भी व्यापक हो जाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि समुद्री सुरक्षा केवल नौसेना या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा होनी चाहिए। स्कूलों और कॉलेजों में इस विषय पर अधिक संवाद हो, ताकि युवा समझ सकें कि नौसेना केवल युद्ध का माध्यम नहीं, बल्कि तकनीकी, वैज्ञानिक और रणनीतिक करियर की एक रोमांचक और प्रतिष्ठित राह भी है। भारत सदियों से समुद्री सभ्यता, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र रहा है; आज जब देश इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक उभरती शक्ति के रूप में देखा जा रहा है, समुद्री कूटनीति और सामरिक साझेदारी पहले से अधिक महत्व रखती है। अंततः नौसेना दिवस तीन शब्दों का उत्सव है—आभार, गर्व और संकल्प। आभार उन वीरों के प्रति जो समंदर की अनिश्चितता से जूझते हुए हमारी सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं; गर्व इस पर कि भारतीय नौसेना आज विश्व की प्रमुख नौसेनाओं में शुमार है; और संकल्प इस बात का कि एक नागरिक के रूप में हम समुद्री शक्ति के महत्व को समझें, आत्मनिर्भर भारत के सपने को मजबूती दें, और समुद्र को केवल संसाधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में देखें। 4 दिसंबर की शुभकामनाएँ देते समय यह स्मृति अवश्य रहे कि यह दिवस उन अदृश्य प्रहरियों का सम्मान है, जो चौबीसों घंटे हमारे लिए लहरों से संवाद करते रहते हैं।

महेन्द्र तिवारी

एसआइआर के साथ बीएलओ की जीवन सुरक्षा भी जरूरी

देश के 12 राज्यों में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम यानी एसआईआर की समय सीमा एक सप्ताह के लिए बढ़ा दी गई है। पहले निर्वाचन आयोग ने इसके लिए अंतिम तारीख 4 दिसम्बर रखी थी, लेकिन अब 11 दिसम्बर तक प्रक्रिया चलेगी। आयोग ने रविवार 30 नवंबर को तीन-पेज के आदेश में यह घोषणा की है। संशोधित कार्यक्रम के मुताबिक अब गणना अवधि 4 दिसम्बर की बजाय 11 दिसम्बर को समाप्त होगी। मसौदा सूची का प्रकाशन 9 की जगह 16 दिसम्बर को होगा और अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 14 फरवरी को किया जाएगा।देश भर में एसआइआर के काम में लगे करीब तीस सरकारी कर्मचारी काम के कथित दबाव में अपनी जान गंवा चुके हैं। उत्तर प्रदेश के संभल में सोमवार को सहायक बीएलओ की सोते-सोते मौत हो गई। इससे पहले 30 नवंबर को मुरादाबाद में एसआइआर काम में लगे टीचर ने सुसाइड कर लिया था। राज्य में अब तक 8 कर्मचारियों की जान जा चुकी है। 3 ने सुसाइड, 3 की हार्ट अटैक से और एक की ब्रेन हेमरेज से मौत हुई थी। सात राज्यों में अब तक 29 बीएलओ की मौत हो चुकी है। सबसे ज्यादा मध्य प्रदेश में 9 बीएलओ की जान गई है। वहीं एसआइआर के विरोध में सोमवार को कोलकाता में पश्चिम बंगाल के मुख्य चुनाव अधिकारी के ऑफिस के बाहर बीएलओ अधिकार रक्षा कमेटी के सदस्यों ने प्रदर्शन किया। गौरतलब है कि विपक्ष शुरु से इस सवाल को उठा रहा है कि एसआईआर करवाने की इतनी हड़बड़ी क्यों है। अगर आयोग ने इसे पूरे देश में करवाने का फैसला लिया भी है तो इसके लिए पर्याप्त मानव संसाधन, प्रशिक्षण और वक्त लिया जाना चाहिए। चंद दिनों में इतनी गहन प्रक्रिया को यूं निपटाया नहीं जा सकता। विपक्ष की यह आपत्ति तब और महत्वपूर्ण हो गई जब बूथ स्तर के अधिकारियों पर अत्यधिक दबाव के कारण यह प्रक्रिया जानलेवा तक बन गई। बीएलओ को कम समय में घर-घर जाकर इस बड़े काम को पूरा करने के लिए भारी दबाव का सामना करना पड़ रहा है, यह कटु सत्य है। पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से बीएलओ द्वारा आत्महत्या से मौतें भी सामने आई हैं। आपको बता दें कि ज्यादातर बीएलओ स्कूल शिक्षक या सरकारी कर्मचारी हैं। एक बीएलओ को औसतन हजार से बारह सौ मतदाताओं तक पहुंचना पड़ रहा है। घर-घर जाकर फॉर्म बांटना, इकट्ठा करना और फिर उनका रिकार्ड करना कड़ी और लंबी प्रक्रिया है, जिसे पूरा करते-करते बीएलओ का दैनंदिन जीवन प्रभावित हो रहा है। बहुत से बीएलओ इस वजह से बीमार पड़ चुके हैं, किसी-किसी की मौत पर उनके परिजनों ने एसआईआर के दबाव को ही जिम्मेदार ठहराया है। कई जगहों पर आरोप है कि लक्ष्य पूरा न करने पर बीएलओ को नौकरी से निकालने, वेतन काटने या प्राथमिकी दर्ज करने की धमकियां भी मिली हैं। बंगाल में खुदकुशी करने वाली बीएलओ रिंकू तरफदार ने लिखा था कि उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण नहीं मिला। पुरानी वेबसाइट से डेटा नहीं मिला। ऑनलाइन फॉर्म जटिल प्रक्रिया है। ऐसे कुछ और प्रकरण भी सामने आए हैं। इन वजहों से प. बंगाल में तो चुनाव आयुक्त कार्यालय के बाहर धरना देने तक की नौबत आ गई। विपक्ष का कहना है कि 2003 में भी एसआईआर हुआ था, लेकिन तब ऐसी कोई घटना नहीं हुई। अब हो रही है, तो जाहिर है व्यवस्था में कोई खामी है। विपक्ष लगातार इसे टालने या ज्यादा समय की मांग कर रहा था। अब इस पर चुनाव आयोग ने एक सप्ताह बढ़ाया है। आयोग ने समय सीमा बढ़ने का बचाव करते हुए कहा कि यह विस्तार चुनाव अधिकारियों को मतदाताओं की मसौदा सूची प्रकाशित करने के लिए अतिरिक्त समय देने के लिए किया गया है। एक सप्ताह बढ़ना पर्याप्त नहीं है। कम से कम 3 से 5 महीने बढ़कर इत्मीनान से काम किया जाता तो शायद ऐसी पुख्ता मतदाता सूची तैयार होती, जिसमें गड़बड़ी की गुंजाइश नाममात्र की बचती। ध्यान रहे कि छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश, पुडुचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, अंडमान-निकोबार और लक्षद्वीप इन 12 राज्यों में एसआईआर हो रही है। जिसमें 51 करोड़ मतदाताओं के नामों, पतों, उम्र आदि की जांच हो रही है। यानी इस समय 51 करोड़ मतदाताओं का हक एसआईआर पर टिका है। किसी लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रिया पारदर्शी व निष्पक्ष होनी चाहिए साथ ही मतदाताओं की विश्वसनीयता भी उतनी जरूरी है ताकि वाजिब वोट ही पुनाव प्रक्रिया ने निर्णायक भूमिका निभाए। इसी आलोक में नौ राज्यों व तीन केंद्रशासित प्रदेशो में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर प्रक्रिया को लेकर उठ रहे सवाल तार्किक समाधान मांगते है। इस प्रक्रिया में तुरत-फुरत की कार्यनीति के पलते कई राज्यों में अफरा-तफरी का आलम नजर आता है। जिसका दबाव जमीनी स्तर पर इस प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों पर पड़ रहा है। कई बूथ स्तरीय अधिकारी यानी बीएलओ बेहद तनाव में नजर आ रहे है। इनका कार्य मतदाता सूचियों को अपडेट करना है। पश्चिम बंगाल और कई अन्य राज्यो में कम समय में अधिक काम के दबाव के चलते कुछ बीएलओ के मरने व आत्महत्या करने के मामले सामने आए है। आरोप है कि उनके वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा ही नहीं बल्कि सत्तारूढ़ और विपक्षी दलों द्वारा भी उन्हें परेशान किए जाने का आरोप है। हालाकि, इस अव्यवस्था के पलते ही पुनाव आयोग ने अब एसआईआर के कार्यक्रम को एक सप्ताह के लिए और बढ़ा दिया है। लेकिन कहना कठिन है कि इस कदम से बीएलओ का तनाव कम करने या विभिन हितधारकों की आशंकाओं को दूर करने में कोई खास मदद मिल सकेगी। कहा जा रहा है कि एक माह पहले शुरू हुई राष्ट्रव्यापी एसआईआर प्रक्रिया में कई तरह की बाधाएं आ रही है। इस प्रक्रिया में करीब 51 करोड़ मतदाता शामिल है, जो तकरीबन भारतीय आबादी का एक-तिहाई से भी ज्यादा है। उनकी शिनाख्त से जुड़ी जानकारी को एक निश्चित समय सीमा में प्रमाणित कर पाना आसान नहीं है। कहा जा रहा है कि निर्धारित समय-सीमा व्यावहारिक नहीं है। तीन महीने की अवधि में गणना प्रपत्रों का वितरण, उसके बाद मसौदा मतदाता सूची का प्रकाशन और फिर अंतिम मतदाता सूपी जारी करना आसान काम नहीं है। बहुत तेजी से काम को अंजाम देने का जिम्मा अधिकारियों पर अतिरिक्त दबाव बना रहा है। निस्संदेह, स्वतंत्र-निष्पक्ष पुनावों हेतु मतदाता सूचियों का शुद्धीकरण एक अनिवार्य शर्त है। लेकिन महत्वपूर्ण काम को जल्दबाजी में नहीं किया जाना पाहिए। मतदाता को यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय मिले ताकि उनके नाम सूची में सही ढंग से दर्ज हो सकें। यही बात बीएलओ के लिए भी लागू होती है, ताकि वे अनुपस्थित, स्थानांतरित, मृत या दोहराव वाले मतदाताओं का डेटा संकलित करने के लिए बूथ-स्तरीय एजेंटो के साथ मिलकर सुचारू रूप से काम कर सकें। चुनाव आयोग का कहना है कि एसआईआर का उद्देश्य 'कोई योग्य मतदाता बाहर न रहे और कोई अयोग्य नाम न रहे' सुनिश्चित करना है। लेकिन विपक्षी दल इसे 'वोट चोरी' का हथियार मानते हैं। बिहार चुनाव के बाद ये आरोप और तेज हो चुके हैं। बिहार चुनाव से पहले ही एसआईआर को लेकर सुप्रीम कोर्ट में कई याचिकाओं पर सुनवाई हो रही है। लेकिन बिहार चुनाव हो भी गए और सुप्रीम कोर्ट ने कोई अंतिम फैसला नहीं सुनाया। अब अगले चुनाव पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, असम हैं। और सुप्रीम कोर्ट में बस सुनवाई ही चल रही है। इस बीच महाराष्ट्र में नगरीय निकाय चुनाव से पहले पता चला है कि मुंबई में करीब 11 लाख मतदाता डुप्लीकेट हैं। ये आंकड़े राज्य चुनाव आयोग से ही मिले हैं। जो कुल मतदाताओं का करीब 10.64 प्रतिशत हिस्सा माने जा रहे हैं। चुनावों में फर्जी मतदाताओं की वजह से विधानसभा चुनावों में महाविकास अघाड़ी की हार हुई, यह कारण भी विपक्ष ने गिनाया। फिलहाल महाराष्ट्र में तो एसआईआर नहीं हो रहा है, लेकिन चुनाव आयोग को इस सवाल का जवाब देना चाहिए कि लोकसभा चुनावों से पहले एसआईआर क्यों नहीं करवाया गया। बहरहाल हमारा सुझाव है कि एसआइआर जितना जरूरी है उतना ही जरूरी इस काम में तैनात सरकारी कर्मचारियों की जिंदगी भी है। सरकार को इस काम में लगे कर्मियों को काउंसलिंग करा कर उनके तनाव को कम करना चाहिये जीवन की प्रथमिकता बनी रहनी चाहिए तमाम सुसाइड व मौत के मामलों की जांच कर आश्रितों को राहत भी देना चाहिए।

मनोज कुमार अग्रवाल

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रवि कुमार अवस्थी द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला विजय लक्ष्मी नगर परगना खैराबाद तहसील व जनपद -सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, हीवेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में छपे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोटः**-उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादो का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.N.I NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0 -9511151254, E-Mail :- news@swatantraprabhat .com

संक्षिप्त खबरें

खेत में पानी को लेकर दो पक्षों में भिड़ंत, मारपीट के बाद दोनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के कुंभडौरा गांव में खेत में पानी लगाने को लेकर दो पक्ष आमने-सामने आ गए। कहा-सुनी के बाद मामला इतना बढ़ा कि मारपीट तक की नौबत आ गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों पक्षों की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।ग्राम निवासी अखिलेश सिंह ने बताया कि मंगलवार को वह अपने खेत में समरसेबल से पानी लगा रहे थे। इसी दौरान अंशुल पांडेय निवासी नरपत का पुरवा तथा शुभम व रिंकू सिंह निवासी कुंभडौरा ने अपने खेत में पानी काट लिया। आरोप है कि विरोध करने पर उनके साथ मारपीट की गई। इस दौरान बीच-बचाव करने पहुंचे ऋतुराज सिंह की बाइक भी तोड़ दी गई।वहीं दूसरी ओर, अंशुल पांडेय ने तहरीर देते हुए आरोप लगाया कि वह अपने खेत से जानवर खदेड़कर लौट रहा था। इसी दौरान अखिलेश व ऋतुराज ने उस पर झूठा आरोप लगाते हुए मारपीट की, जिससे उसे गंभीर चोटें आईं।प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि दोनों पक्षों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मामले की जांच की जा रही है, जिसके आधार पर आगे की विधिक कार्रवाई की जाएगी।

अधिवक्ता दिवस पर कर अधिवक्ताओं ने मेधावी बच्चों को किया सम्मानित, डॉ. राजेंद्र प्रसाद की जयंती पर न्याय व्यवस्था में उनके योगदान को किया याद

लखनऊ। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति और भारत रत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद की जयंती पर सोमवार को राजधानी लखनऊ में अधिवक्ता दिवस बड़े उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। इसी क्रम में मीरा बाई मार्ग

स्थित राज्य कर भवन के मीटिंग हॉल में कर अधिवक्ताओं द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन लखनऊ के सदस्यों के मेधावी बच्चों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश कर अधिवक्ता संगठन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राज पाल यादव उपस्थित रहे। समारोह के दौरान कई वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए और न्याय व्यवस्था के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. राजेंद्र प्रसाद के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर संविधान निर्माण तक के अद्वितीय योगदान को याद किया। इस अवसर पर सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय मिश्र व महामंत्री शिव कुमार पांडेय ने मुख्य अतिथि सहित उपस्थित वरिष्ठ अधिवक्ताओं का माल्यार्पण कर स्वागत एवं सम्मान किया। अध्यक्ष संजय मिश्र ने अपने संबोधन में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के सिद्धांतों, संघर्षों और राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा को प्रेरणादायी बताते हुए कहा कि उनका जीवन अधिवक्ताओं के लिए सदैव मार्गदर्शक रहेगा। मुख्य अतिथि राज पाल यादव ने कहा कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद का व्यक्तित्व न्याय, सत्य और कर्तव्यनिष्ठा का अद्वितीय प्रतीक था। उन्होंने कर अधिवक्ताओं की समस्याओं पर भी चर्चा करते हुए इनके समाधान के लिए संगठन की प्रतिबद्धता दोहराई। कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि द्वारा संघ के मेधावी बच्चों को सम्मानित किया गया। संचालन करते हुए महामंत्री शिव कुमार पांडेय ने बताया कि सेल्स टैक्स बार एसोसिएशन की यह परंपरा रही है कि हर वर्ष अपने सदस्यों के मेधावी बच्चों को सम्मानित कर उनका मनोबल बढ़ाया जाता है। इसी क्रम को कायम रखते हुए अधिवक्ता सुमित तिवारी, संजय मिश्र, श्रीमती लीना मिश्र, अनुराग मिश्र, नृपेन्द्र सिंह एवं सुबोध मेहरोत्रा द्वारा मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित अधिवक्ताओं ने इस आयोजन को बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रेरणास्रोत बताया और कहा कि ऐसे समारोह न केवल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करते हैं बल्कि समाज में अधिवक्ता समुदाय की सकारात्मक भूमिका को भी मजबूत करते हैं।

भीम आर्मी ने विधायक का पुतला फूंकने की करी कोशिश पुलिस ने रोका, नीले कबूतर कहने पर भड़के कार्यकर्ता

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर में भीम आर्मी कार्यकर्ताओं ने बुधवार को भाजपा विधायक ज्ञान तिवारी के खिलाफ जोरदार हल्ला बोला। बताया जाता है कि सोशल मीडिया पर विधायक का एक वीडियो वायरल हुआ, जिसमें उन्होंने कथित रूप से भीम आर्मी कार्यकर्ताओं को 'नीले कबूतर' कहकर संबोधित किया था इस बयान को लेकर कार्यकर्ताओं में नाराज़गी बढ़ती चली गई और विरोध प्रदर्शन का माहौल बन गया दोपहर से ही बड़ी संख्या में भीम आर्मी कार्यकर्ता अंबेडकर पार्क में एकत्र होने लगे। वहां से जुलूस के रूप में वे लालबाग की ओर कूच कर गए। भीम आर्मी के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि विधायक द्वारा दिया गया बयान केवल संगठन का अपमान नहीं बल्कि सामाजिक सौहार्द को ठेस पहुंचाने वाला है। कार्यकर्ताओं ने मांग की कि विधायक को अपने बयान के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए प्रदर्शनकारियों ने लालबाग चौराहे पर पहुंचकर विधायक ज्ञान तिवारी का पुतला दहन करने की कोशिश की। हालांकि पुलिस पहले से ही अलर्ट थी। सीओ सिटी विनायक भोसले के नेतृत्व में पुलिस बल मौके पर पहुंचा और पुतला छीनकर तुरंत वहाँ से हटा दिया।

पुतला छीने जाने पर कार्यकर्ता कुछ देर के लिए आक्रोशित हो गए, लेकिन पुलिस ने समझाकर स्थिति को नियंत्रित किया इस दौरान पुलिस कर्मी और एलआईयू टीम पुतले को लेकर तेजी से चौराहे से बाहर निकल गई ताकि तनाव न बढ़े। अधिकारियों ने प्रदर्शनकारियों से शांति बनाए रखने की अपील की उधर, भीम आर्मी ने सीएम को संबोधित ज्ञापन देते हुए मांग की है कि बीजेपी विधायक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी कि यदि विधायक ने अपनी टिप्पणी वापस नहीं ली और माफी नहीं मांगी तो आंदोलन और तेज किया जाएगा। ज्ञात हो कि ज्ञान तिवारी सीतापुर की सेउता विधानसभा सीट से भाजपा विधायक हैं। उनके बयान और वीडियो वायरल होने के बाद से ही जिले में राजनीतिक माहौल गर्माया हुआ है ज्ञापन सौंपने के बाद कार्यकर्ता वापस लौट गए!!

जबरन मकान बना रहे विपक्षियों को मना करना महिला को पड़ा भारी

महराजगंज रायबरेली। जबरन नींव खोद कर मकान बना रहे विपक्षियों को मना करना महिला को भारी पड़ गया। कब्जे का विरोध करने गई महिला का मारपीट में हाथ टूटा, तीन के खिलाफ केस दर्ज। कोतवाली क्षेत्र के टूक मजरे ओथी गांव निवासी सुखराजा ने कोतवाली पुलिस को दी गई तहरीर में बताया कि बुधवार को गांव के ही छेदी पुत्र राम हरख, छेदी के ससुर व एक अज्ञात साथी के साथ उसकी ही जमीन पर घर बनाने के लिए नींव खोदने लगे । जब उसने नींव खोदने से मना किया तो उन लोगों ने उसे बुरी तरह मारा पीटा, जिससे उसके शरीर पर चोटें व बायां हाथ टूट गया है। महिला की शिकायत पर पुलिस ने मेडिकल परीक्षण के बाद छेदी व छेदी के ससुर सहित तीन के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि केस दर्ज किया गया है कार्यवाही की जाएगी।

गोलीकांड, प्रधान पर साज़िश का आरोप, घायल के परिजनों और आरोपी की बातचीत का ऑडियो, गहराया शक

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर के महोली कोतवाली क्षेत्र के सिघौरा गांव में मंगलवार देर रात एक युवक के घायल अवस्था में मिलने से सनसनी फैल गई परिजनों ने युवक के पैर में गोली लगने की आशंका जताई है जबकि घटना के बाद सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक कथित ऑडियो ने मामले को और उलझा दिया है वायरल ऑडियो के मुताबिक वारदात को योजनाबद्ध तरीके से अंजाम देने की बात सामने आई है घायल युवक की पहचान शिबू पुत्र संजय के रूप में हुई है। वह गांव के बाहर गंभीर हालत में पड़ा मिला था। परिजनों और ग्रामीणों ने तत्काल उसे सीएचसी पहुंचाया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया बताया जाता है कि घायल शिबू और आरोपी युवक पहले दो अलग अलग मामले में जेल जा चुके हैं, जिससे दोनों के बीच पुरानी दोस्ती की भी चर्चा सामने आ रही है इधर, घटना के बाद वायरल हुए ऑडियो क्लिप ने पुलिस को नए सिरे से जांच करने पर मजबूर कर दिया है। ऑडियो में कथित तौर पर घायल युवक और आरोपी युवक का नाम सामने आ रहा है, जो मिलकर वारदात की योजना बनाते सुनाई दे रहे हैं इसमें ग्राम प्रधान ध्रुव सिंह पर भी सह देने का आरोप लगाया जा रहा है। इसी आधार पर शिबू ने गांव के ही युवक उपेन्द्र पुत्र स्व. मलखान सिंह पर गोली मारने का आरोप लगाया है। वहीं इस कहानी में पर्दे के पीछे ग्राम प्रधान का भी अहम रोल बताया जा रहा है पुलिस प्रारंभिक जांच में यह भी देख रही है कि कहीं यह पूरा मामला पुलिस को गुमराह कर झूठी फायरिंग की कहानी बनाने की कोशिश तो नहीं है स्थानीय सूत्रों के अनुसार, घायल और आरोपी युवक सहित ग्राम प्रधान ने मिलकर हमले का नाटक रचने की योजना बनाई थी। जिसकी पुष्टि ऑडियो कर रहा है पुलिस इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस, वायरल ऑडियो और फोन लोकेशन के आधार पर पूरे प्रकरण की जांच कर रही है पुलिस का कहना है कि मामले में सभी पहलुओं की गहनता से जांच की जा रही है, दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी!!

बिसवां बार एसोसिएशन मे मनाया गया अधिवक्ता दिवस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बिसवां, सीतापुर। तहसील बिसवां के बार रूम में अधिवक्ता दिवस बड़े ही उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व बिसवां लायर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अधिवक्ता कमलेंद कुमार बाजपेई ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ एसडीएम शिखा शुक्ला, अध्यक्ष कमलेंद्र बाजपेई तथा द्वारा संयुक्त रूप से देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन ललित शर्मा ने किया। इस अवसर पर उपस्थित अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए एसडीएम शिखा शुक्ला ने कहा कि अधिवक्ता का कार्य केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पण का सर्वोत्तम मार्ग है। उन्होंने कहा कि अधिवक्ता समाज में न्याय की स्थापना और विधि व्यवस्था को मजबूत बनाने में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अवसर पर मुख्य रूप से एल्डर कमेटी के चेयरमैन लालजी वर्मा सचिव सत्य प्रकाश सिंह निर्भय मौर्य आर पी सिंह आनंद मेहरोत्रा के सी वर्मा सर्वेश श्रीवास्तव राजेश सिंह गौरव सिंह संकटा शुक्ला नईम अंसारी प्रमोद मिश्रा रजनीश मिश्रा अश्वनी त्रिपाठी मन्नालाल बाजपेई ओम जी मिश्रा कौशल वर्मा राकेश यादव सुरेश मौर्य सहित भारी संख्या में अधिवक्ता गण उपस्थित रहे।

भरावन में कर्नल आदित्य ने डिजिटल लाइब्रेरी का किया उद्घाटन

भरावन (हरदोई)। मां शारदा शिक्षा निकेतन भरावन में बुधवार को डिजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन मुख्य अतिथि भाजपा नेता कर्नल आदित्य प्रताप सिंह ने किया। फीता काटकर उन्होंने डिजिटल लाइब्रेरी को विद्यार्थियों के लिए समर्पित किया। विद्यालय के व्यवस्थापक रवि प्रताप पाण्डेय ने बताया कि लाइब्रेरी में प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित सभी प्रकार की पुस्तकें तथा कंप्यूटर सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। कार्यक्रम में प्रधानाचार्य विवेक पाण्डेय, विकास पाण्डेय,आशीष पाण्डेय,जीतू पाण्डेय, विभोर पाण्डेय,आकांक्षा सहित विद्यालय स्टाफ एवं ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

डीआईओएस ऑफिस का बाबू निलंबित, स्टिंग ऑपरेशन में रिश्वत कबूलने के बाद कार्रवाई, डीएम ने दिए थे जांच के आदेश

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर में यूपी बोर्ड से स्कूल की मान्यता दिलाने के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ होने के बाद शिक्षा विभाग में बड़ी कार्रवाई की गई है। लोक जनसंदेश के खुफिया कैमरे पर रिश्वत की बात कबूलने वाले डीआईओएस कार्यालय के लिपिक सुभाष को ज्वाइंट डायरेक्टर बेसिक प्रदीप कुमार ने तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है मान्यता पटल संभाल रहे सुभाष का रिश्वत चलने का वीडियो सामने आने के बाद विभाग में हड़कंप मच गया था सूत्रों के मुताबिक, खबर प्रकाशित होने के बाद जिलाधिकारी डॉ. राजगणपति ने सीडीओ और डीआईओएस को जांच के निर्देश दिए थे लेकिन लखनऊ स्तर से हुई त्वरित कार्रवाई के चलते डीएम के निर्देश पर फिलहाल रोक लग गई है। बताया जा रहा है कि संबंधित अधिकारियों को पहले तथ्यात्मक रिपोर्ट तैयार करनी थी, मगर उच्च स्तर से निलंबन का आदेश जारी होते ही स्थानीय स्तर की जांच ठंडे बस्ते में चली गई 1 दिसंबर को लोक जनसंदेश की टीम ने खुफिया कैमरा ऑपरेशन में सुभाष को जूनियर हाई स्कूल की मान्यता के लिए ढाई लाख रुपये 'सुविधा शुल्क' चलने का रिकॉर्ड किया था। स्टिंग में सुभाष ने खुलकर स्वीकार किया था कि इस राशि में से एक लाख रुपये डीआईओएस, 50 हजार एसडीएम, तथा शेष रकम एई और जीआईसी प्रिंसिपल तक पहुंचाई जाती है। इस खुलासे ने शिक्षा विभाग में फैले भ्रष्टाचार की परतें उधेड़ कर रख दी थीं। डीआईओएस राजेंद्र सिंह ने बताया कि ज्वाइंट डायरेक्टर बेसिक के आदेश के अनुसार सुभाष को निलंबित कर दिया गया है और विभागीय कार्रवाई आगे बढ़ाई जा रही है। शिक्षा विभाग में अब इस बात को लेकर चर्चा है कि क्या इस पूरे नेटवर्क में शामिल अन्य अधिकारियों पर भी कार्रवाई की जाएगी या मामला केवल निलंबन तक सीमित रह जाएगा!!

तेज़ रफ़्तार का कहर ट्रक ने होमगार्ड को कुचला हुई मौत, सीओ आवास पर ड्यूटी जाते समय हुआ हादसा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर के सिधौली कोतवाली इलाके में ह्वा 30 पर निर्माणाधीन ओवरब्रिज के समीप मंगलवार देर रात एक भीषण सड़क हो गया यहां हादसे में ड्यूटी पर जा रहे बाइक सवार होमगार्ड की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई हादसा उस समय हुआ जब होमगार्ड रामकिसुन को तेज रफ्तार ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी टक्कर लगते ही होमगार्ड सड़क पर गिर गए और ट्रक उनके दोनों पैरों को कुचलते हुए आगे बढ़ गया घटना के बाद चालक ट्रक मौके पर ही छोड़कर फरार हो गया। मृतक होमगार्ड की पहचान करीब 50 वर्षीय रामकिसुन, निवासी सटूल्लापुर मजरा सैर, थाना रामपुर कला के रूप में हुई है। वह अटरिया थाना में तैनात थे मंगलवार रात वह सीओ आवास पर ड्यूटी करने के लिए खाना लेकर बाइक से सिधौली की ओर जा रहे थे जैसे ही वह सिधौली पहुंचे और बस स्टॉप के पास स्थित हनुमान मंदिर के समीप सर्विस लेन पर पहुंचे, तभी पीछे से आ रहा तेज रफ्तार ट्रक अनियंत्रित होकर उनकी बाइक से जा भिड़ा टक्कर लगते ही रामकिसुन सड़क पर गिर पड़े और गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दी और उन्हें आनन-फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिधौली पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया घटना की जानकारी मिलते ही क्षेत्राधिकारी सिधौली कपूर कुमार और कोतवाली प्रभारी विजेंद्र सिंह तत्काल मौके पर पहुंचे। पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण कर साक्ष्यों की जांच-पड़ताल शुरू कर दी वहीं ट्रक को पुलिस ने कब्जे में ले लिया है और चालक की तलाश तेज कर दी गई है इस दर्दनाक हादसे की खबर फैलते ही पुलिस विभाग तथा होमगार्ड संगठन में शोक की लहर दौड़ गई। ड्यूटी के लिए निकले होमगार्ड की अचानक हुई मौत से साथी कर्मियों में भी गहरा दुःख है। कोतवाली प्रभारी विजेंद्र सिंह ने बताया कि वाहन को हिरासत में लेकर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की जा रही है तथा आरोपी चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसकी गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं!!

क्षेत्र के बारी गौहन्ना ग्राम सभा का पंचायत भवन पूरी तरह से खंडहर में तब्दील

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज,रायबरेली। महराजगंज विकासखंड क्षेत्र के बारी गौहन्ना ग्राम सभा का पंचायत भवन पूरी तरह से खंडहर में तब्दील हो गया है। ग्राम पंचायतों में व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिए सरकार की ओर से काफी पैसा खर्च करके पंचायत भवन का निर्माण कराया जा रहा है, लेकिन बारी गोहन्ना का पंचायत भवन अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो रहा है। बारी गोहन्ना ग्राम प्रधान रामकेवल यादव ने बताया कि गांव की समस्याओं, विकास से जुड़ी योजनाओं व मासिक बैठक के लिए पंचायत भवन बनवाया जाता है, लेकिन यहां की स्थिति बिलकुल विपरीत है। क्योंकि पंचायत भवन खंडहर में तब्दील है। इस कारण पंचायत भवन पर ग्राम सभा की बैठकें नहीं हो पाती हैं। पंचायत भवन से खिड़की दरवाजे गायब हो चुके हैं और चारदीवारी जगह-जगह टूट गई है। शासन को नये पंचायत भवन के निर्माण हेतु प्रस्ताव दे दिया गया है। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि आनंद मिश्रा (बबलू) व ग्राम सभा वासी सतीश शुक्ला, रामकिशोर मौर्य, सुधीर तिवारी, अनिल मिश्रा, छोटेलाल यादव, सुनील मिश्रा, नंदकिशोर साहू, रामहर्ष रावत, रामचंद्र दुबे, सुरेश मिश्रा, राकेश कुमार, रमेशचंद्र, राम नारायन, राम चरन आदि ने बताया कि पंचायत भवन बनवाने का सरकार का उद्देश्य था कि ग्राम प्रधान और ग्राम पंचायत अधिकारी एक साथ बैठ कर ग्रामीणों की समस्याओं का निस्तारण कराएंगे। इससे ग्रामीणों को ब्लाक का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा और परिवार रजिस्टर के नकल से लेकर अन्य जरुरी प्रमाण पत्र गांव में ही मिल जाया करेगा। लेकिन सरकार इस फरमान का असर बारी गोहन्ना ग्राम सभा के ग्राम पंचायत भवन पर लागू नहीं होता। ग्राम सभा के लोगों के मुताबिक लगभग ग्राम सभा में लगभग 40 वर्ष पहले पंचायत भवन का निर्माण तो हुआ लेकिन उसके रख रखाव आदि की व्यवस्था ठीक प्रकार से न होने के कारण समय से पहले ही ढह गया। जिस कारण ग्राम वासियों को 20 किलोमीटर दूर महराजगंज तहसील मुख्यालय जाकर ग्राम सभा स्तरीय कार्य निपटाना पड़ता है। अगर ग्राम सभा में पंचायत भवन का निर्माण हो जाए तो ग्राम वासियों पेंशन, परिवार रजिस्टर की नकल आदि ग्राम सभा स्तरीय कार्यों में काफी सहूलियत मिलेगी। मामले में एडियो पंचायत महराजगंज सीताराम वर्मा ने बताया कि ग्राम सभा से नवनिर्मित पंचायत भवन के निर्माण हेतु प्रस्ताव मिलने पर विभागीय कार्यवाही की जाएगी।

ऐहार गांव में भव्य कलश यात्रा के साथ श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के ऐहार गांव स्थित सुप्रसिद्ध बाल्हेश्वर मंदिर परिसर के निकट सच्चिदानन्द पैलेस में बुधवार को भव्य कलश यात्रा निकाली गई। इसी के साथ सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का विधिवत शुभारंभ हुआ। सुबह से ही ग्रामीणों और श्रद्धालुओं की भीड़ मंदिर परिसर में उमड़ पड़ी।कथा के प्रथम दिवस कथा व्यास पं. झिलमिल महाराज ने राजा परीक्षित, गोकर्ण और धुंधकारी प्रसंग का भावपूर्ण वर्णन किया। सरल और हृदयस्पर्शी शैली में प्रस्तुत की गई कथा सुनकर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। पंडाल में अनेक भक्त मंत्रमुग्ध होकर कथा का रसपान करते रहे।कथा प्रारंभ होने से पूर्व वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच अनुष्ठान, कलश पूजन और कलश स्थापना की गई। महिलाओं ने पवित्र जल से कलश भरने की परंपरा निभाई। कलश यात्रा में महिलाओं, बच्चों और बड़ी संख्या में बुजुर्गों ने भाग लिया। धार्मिक ध्वज, भजन-कीर्तन और मंगल ध्वनियों के साथ कलश यात्रा मंदिर परिसर से निकलकर गांव के विभिन्न देवस्थानों से होती हुई पुनः कथा स्थल पर पहुंची।आयोजकों ने बताया कि प्रतिदिन सुबह कलश पूजन तथा शाम को श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन होगा। मौके पर घनश्याम सोनी, यज्ञ शरण मिश्र, मोहित तिवारी, रोहित मिश्रा, राजू, अमरेंद्र गिरी, गिरजाशंकर दीक्षित, शिवबरन कुशवाहा सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण भक्त मौजूद रहे।

डीएम ने पीएचसी का किया औचक निरीक्षण प्रभारी अधिकारी का कटा वेतन

● अनुपस्थित एएनएम और आंगनबाड़ी स्टाफ को सेवा समाप्ति की नोटिस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। जनपद सीतापुर में जिलाधिकारी डॉ. राजागणपति आर. ने बुधवार को बेहटा विकास खंड के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर का आकस्मिक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं की गहन समीक्षा की निरीक्षण के दौरान लेबर रूम में अभिलेखों का सावधानीपूर्वक अवलोकन किया गया तथा आवश्यक उपकरणों और दवाओं की उपलब्धता की जांच की गई। फोकस लैम्प न मिलने और कई कमियों पर जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। जिलाधिकारी ने स्टाफ की लापरवाही को गंभीर मानते हुए कार्रवाई के निर्देश दिए अनुपस्थित एएनएम और आंगनबाड़ी कार्यकत्री की सेवा समाप्ति का नोटिस जारी करने के आदेश दिए गए। वहीं, कार्यों में रुचि न लेने पर सीएचओ की वार्षिक वृद्धि में पाँच प्रतिशत कटौती करने के निर्देश दिए आशा कार्यकर्ता को भी लापरवाही पर सेवा समाप्ति का नोटिस जारी करने को कहा गया डीएम ने निरीक्षण के दौरान बीपीएम, बीसीपीएम और बैम पर कार्य में उदासीनता पाए जाने पर 15 दिन का वेतन काटने को कहा गया जबकि प्रभारी अधिकारी की लापरवाही पर एक माह का वेतन रोकने के निर्देश दिए गए एमओआईसी का एक दिन का वेतन काटने और स्टाफ नर्स को नोटिस जारी करने के आदेश भी दिए गए जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप जनता को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना प्राथमिकता है उन्होंने आवश्यक दवाओं, जांच किटों की उपलब्धता सुनिश्चित करने, मरीजों को आवश्यक स्वास्थ्य जानकारी देने और काउंसलिंग की व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश दिए निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेश कुमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे!!

उन्नाव हाईवे पर रोडवेज बस की टक्कर से बाइक सवार गंभीर, चालक पर मुकदमा दर्ज

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के उन्नाव हाईवे पर मुबारकपुर के पास रविवार को हुई सड़क दुर्घटना में एक बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद रोडवेज बस चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने का मुकदमा दर्ज किया गया है।कस्बे के बृजेन्द्र नगर मोहल्ला निवासी शिवकरन सिंह ने पुलिस को बताया कि 24 नवंबर को उनका भाई रामकरन सिंह मोटरसाइकिल से सेमरी की ओर जा रहा था। इसी दौरान पीछे से आ रही अमेठी डिपो की रोडवेज बस ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। दुर्घटना में रामकरन गंभीर रूप से घायल हो गया।गंभीर हालत में पहले उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां से जिला अस्पताल और बाद में लखनऊ के लिए रेफर कर दिया गया। फिलहाल उसका इलाज जारी है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि घटना में रोडवेज बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच-पड़ताल शुरू कर दी गई है।

उत्कृष्ट विधिक सेवाओं के लिए अधिवक्ताओं का सम्मान, मैक्स हॉस्पिटल द्वारा स्वास्थ्य शिविर आयोजित

● सदस्य विधान परिषद ने किया कार्यक्रम का शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। विनायक ग्रामोद्योग संस्थान एवं अधिवक्ता सहायता प्रकोष्ठ उ0 प्र0 के संयुक्त तत्वावधान में अधिवक्ता दिवस के अवसर पर मैक्स हॉस्पिटल द्वारा एक दिवसीय स्वास्थ्य शिविर एवं अधिवक्ता सम्मान समारोह का सफल आयोजन किया गया इस अवसर पर हॉस्पिटल द्वारा डिस्काउंट कार्ड भी जारी किए गए। यह कार्यक्रम लखनऊ के अधिवक्ता प्रेरणा स्थल, ग्लोब पार्क कैसरबाग में आयोजित हुआ जिसमें शहर के वरिष्ठ अधिवक्ताओं को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में उन अधिवक्ताओं को विशेष रूप से सम्मानित किया गया जिनकी विधिक सेवाओं, समाज सेवा, कर्तव्य निष्ठा और देश प्रेम के प्रति समर्पण भावना अतुलनीय रही है।कार्यक्रम के आयोजक और विनायक ग्रामोद्योग संस्थान के अध्यक्ष शैलेन्द्र श्रीवास्तव ने लखनऊ बार एसोसिएशन और सेंट्रल बार एसोसिएशन के पदाधिकारियों का भी सम्मान कर संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।इस अवसर पर सहयोगी संस्था श्री गोपेश्वर गौशाला मलिहाबाद के प्रमुख उमाकांत गुप्ता ने सभी सम्मानित अधिवक्ताओं को स्मृति चिन्ह के रूप में पेन और डायरी भेंट की जो उनके लेखन और कार्य में सहायक सिद्ध होगी।यह आयोजन एक ओर जहां समाज को निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने का माध्यम बना, वहीं दूसरी ओर न्याय के स्तंभ अधिवक्ताओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक मंच भी साबित हुआ।इस अवसर पर मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य पवन सिंह चौहान,अखिलेश जायसवाल,अध्यक्ष ,सेंट्रल बार एसोसिएशन,रमेश प्रसाद तिवारी, अध्यक्ष लखनऊ बार एसोसिएशन,ब्रज भान सिंह भानु ,महामंत्री लखनऊ बार एसोसिएशन,डॉक्टर प्रवीण ,सुनील वर्मा एडवोकेट सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

राजकीय महाविद्यालय में किया गया जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

हमीरपुर :- मेरा युवा भारत हमीरपुर युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के तत्वाधान में जिला स्तरीय खेल कूद कार्यक्रम का आयोजन राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुछेछा में किया गया कार्यक्रम में बालक एवं बालिकाओं द्वारा खो - खो, कबड्डी, बैडमिंटन , और दौड़ जैसे विभिन्न खेलो में शानदार प्रदर्शन किया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद नगर पालिका अध्यक्ष हमीरपुर कुलदीप निषाद द्वारा विजित युवाओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ कुछेछा महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. उजैर अजीज एवं राजकीय हाई स्कूल के प्राचार्य श्री शिव नारायण यादव द्वारा सरस्वती मां और विवेकानंद जी की प्रतिमा में माल्यार्पण एवं खिलाड़ियों का परिचय कर किया गया। बालिका 100 मीटर दौड़ में अंशिका प्रथम ,शिवानी द्वितीय, तथा साक्षी तृतीय स्थान पर रही। खो खो में सुष्मिता 9 स्टार हमीरपुर विजेता तथा विवेकानंद टीम धगवा सरीला उपविजेता रही । कबड्डी में कुरारा ब्लॉक की टीम ने प्रथम व मुस्करा टीम द्वारा द्वितीय स्थान प्राप्त किया गया बालिका बैडमिंटन वर्ग में दुर्गा एवं आंशिक ने स्थान प्राप्त किया तथा बालक वर्ग में सुमित , प्रमोद ने स्थान प्राप्त किया बालक वर्ग दौड़ में प्रभात प्रथम , हर्षित द्वितीय, तथा शनि ने तृतीय स्थान प्राप्त किया । कार्यक्रम में निर्णायक मंडल में श्री मती प्रीति , युवराज , निर्भय , विनोद , प्रकाश ,प्रमोद रहे तथा मेरा युवा भारत से मानसिंह, चंद्रकेतु धीरेन्द्र बुंदेलखंड वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष दीप चंद्र उपस्थित रहे।

डा. राजेन्द्र प्रसाद और खुदीराम बोस को दी श्रृद्धांजलि

हमीरपुर :- सुमेरपुर में बुधवार के दिन देश के प्रति समर्पित डॉ राजेन्द्र प्रसाद और खुदीराम बोस की जयंती के अवसर पर आयोजित सभा में ,देश के दोनों सपूतों को श्रद्धांजली दी गई। देशभक्तों की देश के प्रति भूमिका के मद्देनजर वर्णिता संस्था के तत्वावधान में विमर्श विविधा के अन्तर्गत जिनका देश ऋणी है के तहत संस्था के अध्यक्ष डा. भवानीदीन ने एक बेमिसाल राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद व देश के लिये समर्पित युवा बलिदानी खुदीराम बोस की जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि डा. राजेन्द्र प्रसाद सही मायने में एक ईमानदार और संतोषी राष्ट्रपति थे। उनके देश के प्रति योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। डा. साहब का 3 दिसंबर 1884 को जीरादेई बिहार में महादेव सहाय और कमलेश्वरी देवी के घर जन्म हुआ था। संविधान सभा में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। ये देश के पहले राष्ट्रीय नेता थे, जो दो बार राष्ट्रपति रहे। कालांतर में इनका 28 फरवरी 1963 को निधन हो गया। इसी तरह देश के पहले अल्पायु युवा शहीद खुदीराम बोस की जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि खुदीराम बोस वास्तव में किशोर क्रांतिकारी थे। इन्होंने देशभक्तों के जालिम जज किंग्सफोर्ड को मारने का प्रयास किया था। इनके योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता है। मात्र 18 वर्ष की आयु में इन्हें फांसी पर लटका दिया गया था। इस कार्यक्रम में अशोक अवस्थी, सिद्धा, प्रेम, सागर, महावीर प्रजापति इलेक्ट्रीशियन, दयाराम सोनकर, रिचा, रामनरायन सोनकर, विकास, पंकज सिंह, सतेन्द्र, राहुल प्रजापति आदि शामिल रहे।

मौदहा में तीसरे दिन जारी रहा पंचायत सचिवों का आंदोलन

हमीरपुर :- आन लाइन उपस्थिति के आदेश सहित अन्य मामलों को लेकर ,मौदहा में पंचायत सचिवों द्वारा जारी आंदोलन बुधवार को तीसरे दिन भी विकास खण्ड कार्यालय में जारी रहा है। जहां सचिवों ने अपने हाथों में काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया है। ज्ञात हो कि 3 नवंबर को जारी शासनादेश में पंचायत सचिवों की उपस्थिति ऑनलाइन की जानी है। इस शासनादेश को सचिवों ने वर्तमान परिस्थितियों में अव्यवहारिक बताया है। इनका कहना है कि इस आदेश से शासकीय कार्य बाधित होंगे क्योंकि सचिवों का कार्यक्षेत्र व्यापक है। कई ऐसे सचिव भी हैं जिनके पास में 3 से लेकर 7 ग्राम पंचायतों का अतिरिक्त प्रभार है। ऐसी स्थिति में ऑनलाइन हाजिरी दर्ज करना संभव नहीं है। इन सचिवों की मांग है कि इस शासनादेश को तत्काल प्रभाव से वापस लिया जाए। इन्होंने बताया कि प्रदेश स्तरीय आह्वान पर 4 नवंबर तक काली पट्टी बांधकर यह विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा। बुधवार को जारी विरोध प्रदर्शन में नितेश कुमार चंदेल, उपेन्द्र नाथ पाण्डेय,शिवमूरत सिंह,प्रियंका सिंह,दिगम्बर सिंह,राजू सिंह,भगवान सिंह,अरविंद सोनी,गिरीश पटेल,हरि बाबू सहित अन्य सचिव मौजूद रहे हैं।

रामजग बनाम श्रीपति प्रकरण : 14 साल पुरानी जमीनी लड़ाई का हुआ अंत, अदालत ने सुनाया ऐतिहासिक फैसला

● 14 वर्ष पुरानी लड़ाई में वादी की ऐतिहासिक जीत, अदालत ने किया न्याय का परचम बुलंद

वादी के पक्ष में संपत्ति की डिक्री, क्षेत्र में जश्न का माहौल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश लगभग 14 वर्षों से चले आ रहे चर्चित रामजग मिश्रा बनाम श्रीपति मिश्रा विवाद में अदालत ने गुरुवार को ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए वादी राम यज्ञ (उर्फ़ रामजग) के पक्ष में संबंधित मकान और ज़मीन की डिक्री कर दी। क्षेत्र में इस निर्णय का व्यापक स्वागत किया जा रहा है और ग्रामीणों ने कहा है कि यह फैसला न्यायपालिका पर विश्वास को और मजबूत करता है।

90 वर्षीय वृद्ध से धमकी व मारपीट कर कराया गया था बैनामा

यह मामला वर्ष 2010 का है, जब लगभग 90 वर्ष के वृद्ध राम यज्ञ से उनके भतीजे श्रीपति ने कथित रूप से मारपीट व धमकी देकर ज़मीन का बैनामा करा लिया था। आरोप है कि श्रीपति ने अपने रिश्तेदार सिद्धू के साथ मिलकर वादी को दहशत में रखा और इलाज के बहाने ले जाकर दबावपूर्वक दस्तावेज़ लिखवा लिए। वादी पक्ष के अनुसार, श्रीपति ने यह तक धमकी दी कि यदि ज़मीन नहीं लिखी गई तो वह वादी के इकलौते बेटे–जो अमेरिका में रहते हैं–को फंसाकर फांसी तक दिलवा देगा। भय और विवशता की स्थिति में वृद्ध ने बैनामा कर दिया था।

उपकारों के बावजूद हुआ विश्वासघात

स्थानीय लोगों ने बताया कि राम यज्ञ का परिवार वर्षों से श्रीपति मिश्रा के परिवार का सहारा रहा है। वादी के अमेरिका निवासी बेटे राम मिश्रा और बहू किरन मिश्रा ने श्रीपति की बेटी की शादी से लेकर उनके बेटे मोहन उर्फ़ संदीप मिश्रा की पढ़ाई व नौकरी तक में सहायता की।

साथ ही श्रीपति मिश्रा के इलाज और घर निर्माण में भी कई लाखों रुपये करके राम मिश्रा द्वारा ही करवाया गया था । लोगों का कहना है कि इसके बावजूद पीठ पीछे हुए इस विश्वासघात ने पूरे क्षेत्र को वर्षों तक दुख और आक्रोश में रखा।

अदालत ने कहा — दबाव और भय में कराया गया बैनामा मान्य नहीं

लंबी कानूनी लड़ाई के बाद अदालत ने यह स्पष्ट कर दिया कि वृद्धावस्था, दवा कराने के बहाने से धोखाधड़ी, कूटरचित और षड़यंत्र से कराया गया बैनामा वैधानिक रूप से स्वीकार्य नहीं है। साथ ही बैनामा कराने पर कोई भी प्रतिफल के रूम में नहीं दिया गया था अदालत ने वादी राम यज्ञ के पक्ष में मकान और ज़मीन की डिक्री जारी करते हुए संपत्ति का स्वामित्व वापस बहाल कर दिया। श्रीपति मिश्रा के ही समधी सिद्धू शुक्ल समेत रिस्तेदार ही बने थे गवाही अदालत ने यह भी कहा कि रामयज्ञ मिश्रा की बेटी तहसील कादीपुर से सटे जिला अम्बेडकरनगर में रहती है वह उनको जानकारी भी दे सकते थे लेकिन रामयज्ञ मिश्रा की तरफ से कोई भी गवाही बैनामे में नहीं थी साथ ही वादी का पूरा परिवार समृद्ध और आर्थिक रूप से मजबूत होने के कारण बैनामा करने की किसी भी तरह की किसी भी सम्भावना से इंकार किया सूत्रों की माने तो इस पूरे षड़यंत्र को अंजाम देने में कादीपुर निवासी शुक्ला बिल्डिंग मटेरियल के संचालक और श्रीपति मिश्रा के समधी सिद्धू शुक्ला का हाथ बताया जा रहा है। ग्रामीणों ने इस फैसले को 'सत्य की जीत' और 'न्याय का उत्सव' बताया है। लोगों ने कहा कि अदालत ने पुनः साबित कर दिया कि 'सत्य परेशान हो सकता है, पर पराजित नहीं।'

क्षेत्र में खुशी की लहर

फैसले के बाद क्षेत्र में खुशी का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि वर्षों से चले आ रहे इस विवाद में आया यह फैसला न केवल पीड़ित परिवार के लिए राहत है, बल्कि समाज के लिए भी बड़ा संदेश है कि न्याय देर से सही, मिलता अवश्य है।

स्काउट्स छात्रों का कालेज में हुआ सम्मान

हमीरपुर :- भारत स्काउट्स और गाइड्स डायमंड जुबली 19वीं राष्ट्रीय जम्बूरी कार्यक्रम लखनऊ में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम के समापन पर बतौर मुख्य अतिथि पहुंची भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सभी स्काउट्स गाइड्स छात्रों को सम्बोधित करते हुए उन्हें सम्मानित किया था। जिसमे उत्तर प्रदेश के सभी स्कूल कालेजों से हजारों स्काउट्स बच्चों ने प्रतिभाग किया। वहीं उक्त कार्यक्रम में चित्रकूट मंडल से हमीरपुर जनपद के रहमानिया इंटर कालेज से लगभग एक दर्जन बच्चों ने स्काउट अध्यापक शोएब अहमद के नेतृत्व में प्रतिभाग किया था। उक्त कार्यक्रम 20 नवम्बर से 29 नवम्बर तक चला। कार्यक्रम के समापन के बाद मंगलवार को रहमानिया इंटर कालेज पहुंचे स्काउट्स छात्रों एवं अध्यापक का प्रधानाचार्य ने फूल माला पहनाकर स्वागत किया और सभी छात्रों को सम्मानित करने का कार्य किया। इस दौरान मुशर्रफ कमाल, नजमुद्दीन, इरशाद सहित समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

सेमीफाइनल में दिल्ली टीम ,झांसी को 96 रनों से हराकर फाइनल में पहुंची

● 82 रनों की पारी खेलने वाले अमन यादव चुने गए मैन ऑफ दी मैच।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर :- मौदहा कस्बा के रहमानिया खेल ग्राउंड में चल रहे मौलाना सलीम मेमोरियल अखिल भारतीय खेल महोत्सव के दूसरे फेज में शुरू हुए क्रिकेट टूर्नामेंट का बुधवार को पहला सेमीफाइनल मुकाबला दिल्ली और झांसी के मध्य खेला गया जिसमे बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे तौफिक कलीम ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर मुकाबला शुरू कराया। जिसमे टूर्नामेंट का पहला सेमीफाइनल मुकाबला दिल्ली और झांसी के बीच 20-20 ओवरों का खेला गया। जिसमे झांसी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का निर्णय लिया। बल्लेबाजी करने उतरी दिल्ली की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में 7 विकेट के नुकसान पर 178 रन बनाए और सामने वाली टीम को 179 रनों का लक्ष्य दिया। दिल्ली की ओर से अमन यादव ने 47 गेंदों 82 रनों की ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की। जबकि अभय यादव ने 29 रन बनाए जबकि झांसी के अमित कुमार ने दिल्ली के तीन विकेट झटके। वहीं लक्ष्य का पीछा करने उतरी झांसी अपने 12वें ओवर में 82 रनों पर सिमट गई। दिल्ली की ओर से सौरभ व अमन ठाकुर ने 3-3 विकेट लिए। इसी तरह दिल्ली ने 96 रनों से सेमीफाइनल मुकाबला जीतकर फाइनल में प्रवेश पा लिया। दिल्ली की ओर से 82 रनों की ताबड़तोड़ पारी खेलने वाले अमन यादव को मैन ऑफ दी मैच चुना गया। जिन्हें मुख्य अतिथि द्वारा ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। मैच में अंपायर की भूमिका अज़ीज़ मिंटू व डॉ आसिफ परवेज ने की। इस दौरान कमेटी अध्यक्ष बीतू बादशाह, फिरोज़ कमाल, मोहम्मद अहमद (गुड्डू), अकील कतर,चंदू तकिया, एजाज बहरीन सहित अन्य कमेटी सदस्य उपस्थित रहे।

श्रीभूमि जिले के गरीब आदिवासी परिवार की 5 वर्षीय बच्ची अर्चना बर्मन भयावह आग लगने की दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुई

● आपातकालीन चिकित्सा सेवा में सरकारी सहायता की मांग।

मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री और स्थानीय विधायक का ध्यान आकर्षित।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि जिले की रामकृष्णनगर विधानसभा के दुल्लभछड़ा के पास स्थित रांखल गांव के भेटारबंद जीपी के अत्यंत गरीब आदिवासी परिवार की 5 वर्षीय बच्ची अर्चना बर्मन भयावह आग लगने की दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुई। जानकारी मिली है कि यह घटना गत 28 नवंबर की सुबह ठंड के कारण घर के बाहर थोड़ी लकड़ी से आग जलाई गई थी और तभी अर्चना वहाँ गई और आग फैल गई और भयावह रूप ले लिया। परिवार के लोग तुरंत आग बुझाने की कोशिश करने लगे, लेकिन बच्ची आग के कारण बहुत अधिक जल गई थी। तुरंत ही उसे दुल्लभछड़ा अस्पताल ले जाया गया। वहां इलाज के बाद डॉक्टर ने शिलचर मेडिकल में उत्तम इलाज की सलाह दी। परिवार ने उसकी उचित चिकित्सा के लिए शिलचर ले जाने का निर्णय किया. इसके बाद पहले उसे सिलचर मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया, लेकिन सही ढंग से उन्नत सेवा न मिलने और लंबी इलाज के बावजूद स्थिति में सुधार न होने पर परिवार को मजबूर होकर 4 दिन बाद स्वास्थ्य सेवाओं के उच्च मानक न होने के कारण फिर ग्रीन हिल्स ले जाया गया, वहां लंप इंफेक्शन और ऑक्सीजन की समस्या के कारण स्थानांतरित कर बच्चे को एक प्राइवेट नर्सिंग होम जीवन ज्योति मेडिकल ले जाया गया। इसके बाद परिवार में पैसे की कमी होने के कारण एडमिशन नहीं हो सका। उस परिवार की दुखद कहानी सोशल और वीडियो के माध्यम से जानने के बाद पूर्व एनएफ रेलवे के चीफ इंजीनियर रामकृष्णनगर के सोनबिल इलाके के प्रद्युत दास ने आशिष चक्रवर्ती के वीडियो सोशल पोस्ट देख कर फोन पर संपर्क किया और बच्चे से सिलचर में मिले, अपने हाथ से 11 हजार रुपये मदद की और जीवन ज्योति मेडिकल में इलाज की सुविधा करवाई। लेकिन बच्चे की स्थिति ठीक होने के लिए और पैसे की ज़रूरत है, आर्थिक रूप से परिवार पूरी तरह असहाय है। आम लोगों का सहयोग और स्थानीय स्वैच्छिक सामाजिक कार्यकर्ता आशिष चक्रवर्ती, जो व्यक्तिगत पहल और अपने सोशल मीडिया के माध्यम से धन जुटाने की व्यवस्था कर रहे थे. अब तक इलाज में कुछ हद तक मदद संभव हुई है। लेकिन बच्चे के पिता नीलमणि बर्मन के अनुसार, वर्तमान चिकित्सा खर्च उनके लिए वहन करना असंभव है। आशीष चक्रवर्ती ने बताया कि बच्चे का जीवन बचाने के लिए अब सरकारी मदद की तीव्र आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान इलाज का खर्च लगातार बढ़ रहा है और किसी भी तरह से यह आम लोगों की क्षमता के भीतर नहीं है। स्वास्थ्य सेवा की गुणवत्ता को लेकर स्थानीय लोगों के एक हिस्से ने तर्कसंगत सवाल उठाए हैं कि इतने बड़े सरकारी सिलचर मेडिकल सुपर स्पेशलिटी अस्पताल होने के बावजूद एक गंभीर रूप से जलन पीड़ित बच्चे को प्राइवेट नर्सिंग होम में क्यों ले जाना पड़ता है, जबकि सही चिकित्सा सुविधा सरकारी व्यवस्था में ही मिलती है, तो गरीब परिवारों को प्राइवेट अस्पताल में आश्रय लेने की जरूरत नहीं होती. इसका मतलब समझा जा सकता है कि सिलचर की मेडिकल सेवाओं में कमी है। इस मामले में सही तरीके से जांच के माध्यम से सरकार के हस्तक्षेप की कामना गरीब अर्चना के परिवार और स्थानीय लोगों ने कि है, उम्मीद कर रहे हैं कि सरकार जल्दी ही कदम उठाएगी और 5 साल के इस छोटे बच्चे के लिए उन्नत चिकित्सा सुविधा का प्रबंध करेगी, ताकि वह फिर से स्वस्थ जीवन में लौट सके। इस संदर्भ में परिवार की ओर से लोकप्रिय मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा, स्वास्थ्य मंत्री अशोक सिंगल और स्थानीय विधायक विजय मालाकार का ध्यान आकर्षित किया गया है। ताकि बच्चा उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से स्वस्थ होकर घर वापस आ सके।

50 शैय्यायुक्त संयुक्त चिकित्सालय बांसी का डीएम ने किया निरीक्षण, दिए निर्देश

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन द्वारा 50 शैय्यायुक्त संयुक्त चिकित्सालय बांसी का निरीक्षण किया गया। जिलाधिकारी द्वारा इमरजेंसी वार्ड, ओपीडी, जनरल वार्ड, लेबर रूम, पैथालाजी आदि को देखा गया। निरीक्षण के दौरान अस्पताल परिसर में साफ-सफाई व्यवस्था ठीक नहीं पाया गया जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्सा अधीक्षक को साफ-सफाई व्यवस्था सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि सभी डाक्टर व कर्मचारी समय से उपस्थित रहें। मरीजों का ठीक ढंग से चिकित्सा सुविधा व जांच उपलब्ध करायें। मरीजों को किसी भी प्रकार की परेशानी न होने पाये। एक्स-रे मशीन को संचालित करायें तथा गर्भवती महिलाओं का अल्ट्रासाउण्ड की सुविधा उपलब्ध कराये। अधिक से अधिक डिलीवरी अस्पताल में करायें। निरीक्षण के दौरान मुख्य चिकित्सा अधीक्षक बांसी व अन्य स्टाफ उपस्थित रहे।

मतदाता सूची पुनरीक्षण तेज़ नारी शक्ति संगठन गजियाबाद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)। सितम्बर 2025 से संसद द्वारा पारित निर्वाचन आयोग के लिए मतदाता सूची पुनिरीक्षण क़ानून (SIR) के आधार पर बहुत से राज्यों मे निर्वाचन आयोग द्वारा कुछ राज्यों मे SIR की प्रक्रिया शुरू हों गई, जिसमे देश विरोधी और विपक्षी कुछ एक दल जहाँ SIR का विरोध कर रहे है वही देशभक्ति,नारी अधिकार सम्मान की रक्षा के लिए संकल्प लिए राष्ट्रवादी संस्था, नारी शक्ति संगठन गाजियाबाद द्वारा, अपने अध्यक्ष अंतराष्ट्रीय ज्योतिषचार्य , युवाओ और महिलाओ मे अत्यधिक लोकप्रिय तेजतर्रार यूथ आइकन माननीया रीमा वर्मा के नेतृत्व मे गाजियाबाद मे स्ढ्रक्के समर्थन मे पोस्टर बैनर,कट आउट, तख्ती लिए भव्य रैली निकाली गई, नारी शक्ति संगठन के आह्वान मे इस रैली मे SIR के समर्थन मे बड़ी संख्या मे मुस्लिम और दलित महिलाये भी शामिल हुई और निर्वाचनआयोग के समर्थन मे जिंदाबाद के नारे लगे, तथा SIR की प्रबल विरोध कर रही,,बंगाल के मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का, मुर्दाबाद के नारे लगाती हुई संगठन की महिलाओ ने ऑपरेशन सिंदूर तिरंगा चौक (पुराना नाम पन्नू चौक) पर उनके पुतले को चप्पल से पीट पीट कर ममता बनर्जी का पुतला दहन किया गया रैली मे संगठन के मुख्यरूप से अंजुम, आरा खान, तरंन्नुम, मिथलेश उपाध्याय, महरीन, संगीता, अनीता, उमा, शैली, मीनू बोस, अंजना, इंदु,स्मृति, सहित सैकड़ो महिलाये रैली मे भाग लियो।

रामकृष्णनगर विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में लंबे समय से लगातार हो रही गाय चोरी की घटनाओं को लेकर विभिन्न क्षेत्रों में डर का माहौल

● रताबाड़ी पुलिस प्रशासन के अधिकारी और ग्राम सुरक्षा दल मौन भूमिका में! इलाके के निवासियों में गुस्सा।

जिले प्रशासनिक के उच्च अधिकारियों सहित डीसी का ध्यान आकर्षित।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि जिले के रामकृष्णनगर क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में लगातार गाय चोरी की घटनाओं को लेकर आतंक फैल रहा है। लंबे समय से क्षेत्र के विभिन्न गांवों से दिन के समय खुले मैदानों से बिना रोक-टोक गाय चोरी की घटनाओं के कारण पूरे क्षेत्र में भय का माहौल है। चोरों का साहस दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है; पहले रात में चोरी होती थी, अब दिन में भी निर्भीक होकर बिना किसी डर के चोरी की जाती है। क्षेत्र में लंबे समय से गाय चोरी की घटनाएं चिंता बढ़ा रही हैं। गहरी रात और दिन में संगठित चोरों के आतंक से आम लोगों की नींद हराम हो गई है। लगभग हर मोहल्ले से लंबे समय से गाय चोरी की शिकायतें सामने आ रही हैं। पिछले शनिवार रात को विहाईरडाला अलमास उद्दीन के घर के गोदाम से एक बैल और एक गाय चोरी हो गई। इसी तरह, पिछले शुक्रवार रात हुलासनगर से एक गाय चोरी हो गई, और उसके ठीक एक दिन पहले रात पेछायाला गाँव से दो-तीन गायों के चोरी होने की खबर मिली। घटनाओं के बावजूद प्रशासन और गाँव रक्षक बल की चुप्पी के कारण नाराजगी लगातार बढ़ रही है। स्थानीय लोग स्पष्ट रूप से आरोप लगाते हैं कि प्रशासन की लापरवाही के कारण चोर इतने साहसी हो रहे हैं। उनका दावा है कि लगातार शिकायतें दर्ज कराने के बावजूद पुलिस की नजरबंदी, गश्ती या जांच में कोई स्पष्ट पहल नहीं दिखाई देती। इसके चलते चोरी के गिरोह और भी निर्भीक हो रहे हैं। प्रशासन की चुप्पी के कारण गरीब किसान नुकसान उठा रहे हैं। लगातार गाय चोरी की घटनाओं से गाय पालन करने वाले लोग भयभीत हो रहे हैं। इन गिरोहों के खिलाफ किसी बड़े स्तर की कार्रवाई या कदम उठाते हुए राताबाड़ी पुलिस प्रशासनिक रूप से नहीं दिखाई देता। क्षेत्रवासियों के अनुसार, रात में गश्ती बढ़ाना, संदिग्धों पर कड़ी निगरानी रखना जरूरी है। नज़रदारी और ग्राम रक्षा बल को सक्रिय करने से ही इस चोर गिरोह को दबाया जा सकता है। बार-बार गाय चोरी होने के कारण कई परिवार आर्थिक नुकसान का सामना कर चुके हैं। स्थानीय जनता ने प्रशासन से तेजी से प्रभावी कदम उठाने की जोरदार मांग की है। उनका मानना है कि अगर अभी भी कड़े हाथों से सामना नहीं किया गया, तो स्थिति और अधिक अनियंत्रित हो सकती है। इस विषय में क्षेत्रवासियों ने जिले के प्रशासनिक उच्चाधिकारियों सहित जिले के डीसी का ध्यान आकर्षित किया कि सही तरीके से जांच करके उचित उपाय किए जाएं।

दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा 120 दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिल एवं विभिन्न उपकरणों का किया गया वितरण

● कार्यक्रम में प्रतिभाग कर प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को डीएम ने मेडल पहनाकर किया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोण्डा। अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांगजन दिवस के अवसर पर जनपद गोण्डा के पी.ए.सी. ग्राउन्ड में बुधवार को बेसिक शिक्षा विभाग एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा संयुक्त रूप से एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण, प्रोत्साहन तथा समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए दिव्यांगजन एवं दिव्यांग बच्चों ने बड़ी उत्साहपूर्ण सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिलाधिकारी गोंडा प्रियंका निरंजन रहीं, जिन्होंने कार्यक्रम में विजयी प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए कहा कि दिव्यांगजन समाज की शक्ति हैं और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने तथा उन्हें मुख्यधारा से जोड़ने के लिए शासन एवं प्रशासन लगातार प्रयासरत है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं और अधिकारियों को निर्देशित किया कि दिव्यांगजनों को योजनाओं का लाभ समयबद्ध रूप से उपलब्ध कराया जाए। कार्यक्रम में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा 120 दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिल एवं विभिन्न उपकरणों का वितरण किया गया। यह वितरण विशेष अभियान के अंतर्गत किया गया जिसका उद्देश्य दिव्यांगजनों को अधिक आत्मनिर्भर और गतिशील बनाना है। प्राप्तकर्ताओं के चेहरों पर प्रसन्नता साफ झलक रही थी, जिससे कार्यक्रम का वातावरण अत्यंत उत्साहपूर्ण रहा। इसके अतिरिक्त बच्चों तथा प्रतिभागियों के लिए कई सांस्कृतिक एवं खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया,जिनमें दौड़, रस्साकसी, कुर्सी दौड़, शब्द-भेदी लक्ष्य, कबड्डी, मटकी फोड़ आदि प्रमुख रहे। प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को जिलाधिकारी द्वारा मेडल, प्रमाणपत्र और उपहार देकर सम्मानित किया गया। इन प्रतियोगिताओं ने न केवल बच्चों प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाया। सभी ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन समाज में दिव्यांगजनों के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के दौरान जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी, विभिन्न विभागों के अधिकारीगण, शिक्षक संघ के पदाधिकारी, शिक्षक-शिक्षिकाएं तथा अभिभावक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

महाविद्यालय में विवादः छात्र ने लगाया धमकी और अभद्र व्यवहार का आरोप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल/ब्यौहारी। पंडित राम किशोर शुक्ल स्मृति शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में एक छात्र द्वारा गंभीर आरोप लगाए जाने का मामला सामने आया है। बी.ए. द्वितीय वर्ष के छात्र चंद्रशेखर साकेत ने दावा किया है कि 1 दिसंबर 2025 को कॉलेज पहुँचने पर उनकी मुलाकात डब्बू उर्फ शिवांशु सिंह से हुई, जो स्वयं को महाविद्यालय का स्टाफ/टीचर बताकर परिचय देते हैं। छात्र के अनुसार, मैदान में मौजूद शिवांशु सिंह किसी प्रकार की गेंद (गोला) फेंकने की गतिविधि कर रहे थे। चंद्रशेखर साकेत बताते हैं कि उन्होंने तू तड़क करके कहा कि गोला '।फेक तो मै फेंका इसके बाद शिवांशु सिंह ने एक गोला फेंका, जिस पर चंद्रशेखर ने मुस्कुराते हुए कहा– 'सर, इस तरह गोला नहीं फेंकते हैं '। आरोप है कि इसी टिप्पणी के बाद मामला अचानक बिगड़ गया।

छात्र के अनुसार शिवांशु सिंह ने गुस्से में आकर कहा—> 'तू जानता नहीं कि किससे बात कर रहा है ' और इसके बाद कथित रूप से अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए गंभीर धमकियाँ दीं। और कहा कि तेरी औखाद क्या है मेरे से बात करने का मै P.H.D कर रहा हु औकाद होगा तो करके दिखाना तब बात करना

चंद्रशेखर साकेत का दावा है कि उन्हें यह तक कहा गया—> 'मैं तुम्हें मार दूँगा 'घटना के बाद छात्र समुदाय में नाराज़गी और चिंता दोनों देखने को मिली हैं। कई छात्रों ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति गलत तरीके से स्वयं को टीचर बताकर छात्रों को धमका रहा है, तो यह महाविद्यालय के अनुशासन और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। महाविद्यालय प्रशासन की ओर से इस मामले पर कोई औपचारिक बयान अभी तक प्रकाशित नहीं किया गया है, लेकिन छात्रों ने मांग की है कि आरोपी व्यक्ति की पहचान, भूमिका और व्यवहार की तत्काल एवं निष्पक्ष जांच कराई जाए।

दाउदनगर में इंटरलॉकिंग व अन्नपूर्णा भवन का ब्लॉक प्रमुख ने किया उद्घाटन

लखनऊ। विकासखंड मोहनलालगंज में जब से ब्लॉक प्रमुख ओम प्रकाश शुक्ला बिंदेश्वरी ने कमान संभाली है तब से विकासखंड मोहनलालगंज के हर ग्राम पंचायत में इंटरलॉकिंग रोड का निर्माण कराकर क्षेत्र का चौमुखी विकास किया है। क्षेत्र में इतना ज्यादा विकास किया है कि आज लोग उनको विकास पुरुष के नाम से जानते हैं। वह जिधर भी चले जाते हैं लोग उनकी जय जयकार करने लगते हैं। जिन रोडो को आजादी के बाद भी नहीं बनाया गया उन रोडो को बनाने का काम ब्लॉक प्रमुख ओमप्रकाश शुक्ला बिंदेश्वरी द्वारा किया गया। इसी क्रम में उन्होंने सोमवार को ग्राम पंचायत दाउदनगर में इंटरलॉकिंग व अन्नपूर्णा भवन का उद्घाटन किया। दाउदपुर गांव में जैसे ही ब्लॉक प्रमुख ओमप्रकाश शुक्ला बिंदेश्वरी पहुंचे वैसे ही वहां के लोग उनकी जय जयकार करते हुए उनको धन्यवाद दिया। उद्घाटन कार्यक्रम में सुभाष पांडे, राजेश पांडे, प्रधान कुलवंत सिंह, अजमेर सिंह, रामकिशोर परीदीन, पंचायत सचिव अकरम अंसारी विशेष रूप से मौजूद रहे।